अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





लोक गीत
Folk Song

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक गीत Folk Song

अध्याय शीर्षक	लोक गीत
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Folk Song**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

लोक गीत Folk Song

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक गीत Folk Song

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – लोक गीतों का संक्षिप्त वर्णन

लोक गीत Folk Song

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक गीत

लोक गीतों का वर्गीकरण व सारान्श

0	वर्गीकरण
1	ऋतु गीत
2	रीति–रिवाज
3	वीरगाथा
4	बच्चों के
5	संस्कार गीत
6	उत्सव व त्यौहार
7	रीति–रिवाज
8	श्रम गीत
9	भिक्षावृति के गीत
10	लोक नृत्य
11	यात्रा
12	धार्मिक गीत
13	औत्सोविक
14	सामाजिक
15	फागे
16	ऐतिहासिक गीत
17	वीरगाथा
18	वीररस
19	रूपगत
20	भावगत
21	विषयगत
22	जातिगत
23	अन्य अवसर

लोक गीतों का विवरण सन्क्षिप्तिकरण

0			गीत नाम अकुत्रि	समय
1	ऋतु गीत	3	मलारें	श्रावण और भाद्रपक्ष में
2	ऋतु गीत	4	सावन	श्रावण और भाद्रपक्ष में
3	ऋतु गीत	5	बिलवारी	क्वार और कार्तिक में
4	ऋतु गीत	6	दिवारी	क्वार और कार्तिक में
5	ऋतु गीत	7	बाबा	संक्रांति आदि तीर्थ यात्रा के समय
6	ऋतु गीत	8	भोला गीत	संक्रांति आदि तीर्थ यात्रा के समय
7	ऋतु गीत	9	फागें–सख्याऊ	माघ और फाल्गुन में
8	ऋतु गीत		फागें–खुरयाउ	
9	ऋतु गीत		फागें–चौकइयाऊ	

लोक गीत **Folk Song**

10	ऋतु गीत		फागें–छंदयाऊ	
11	ऋतु गीत	10	लेदें	माघ और फाल्गुन में
12				
13	वीरगाथा	1	राछरे	
14	वीरगाथा	2	पवारे	
15	बच्चों के	1	लोरियां	
16	बच्चों के	2	बच्चों के खेल गीत	
17	संस्कार गीत	1	सोहरे	
18	संस्कार गीत	2	मल्हारे	
19				
20	उत्सव व त्यौहार	1	फागें	
21	उत्सव व त्यौहार	2	स्वांग	
22	उत्सव व त्यौहार	3	राई	
23	उत्सव व त्यौहार	4	दिवारी	
24	उत्सव व त्यौहार	5	तीजा	
25	उत्सव व त्यौहार	6	आरती	
26	उत्सव व त्यौहार	7	तुलसी का व्याह	
27				
28	रीति–रिवाज	11	गारी	विवाहादि अवसरों पर
29	रीति–रिवाज	1	बनरा	
30	रीति–रिवाज	2	गारी	
31	रीति–रिवाज	3	विदा के गीत	
32	रीति–रिवाज	4	बधाई	
33	रीति–रिवाज	5	भांवर	
34	रीति–रिवाज	6	विवाह के सम्पूर्ण गीत	
35	रीति–रिवाज	7	सोहरे	जन्मोत्सव पर गाया जाने वाला गीत
36				
37	श्रम गीत	1	दिनरी	
38	श्रम गीत	2	बीरौठी	
39	श्रम गीत	3	अनबोलना	
40	श्रम गीत	4	बिलवारी	
41				
42	भिक्षावृति के गीत	1	बसदेवा के गीत (हास्य रस पूर्ण)	
43				
44	लोक नृत्य	1	राई	
45	लोक नृत्य	2	ढ़िमरयाई	
46	लोक नृत्य	3	सैरों	आषाढ़ और सावन में गाये जाते हैं।
47	लोक नृत्य	4	दिवारी	
48	लोक नृत्य		बधाई	

लोक गीत Folk Song

49				
50	यात्रा	1	भोला के गीत (बम्बुलियां)	
51				
52	धार्मिक गीत	1	प्रभाती	
53	धार्मिक गीत	2	भगतें	
54	धार्मिक गीत	3	जस	
55	धार्मिक गीत	4	गोहें	
56	धार्मिक गीत	5	बीरौठी	
57	धार्मिक गीत	6	माता के गीत	
58	धार्मिक गीत	7	कार्तिक गीत	
59	धार्मिक गीत	8	गोहें	
60	धार्मिक गीत	9	लावा के गीत	
61	धार्मिक गीत	10	नौरता	
62	धार्मिक गीत	11	दमेटवा एवं	
63	धार्मिक गीत	12	अन्य देवी–देवताओं के भजन	
64				
65	औत्सोविक	1	साजन	
66	औत्सोविक	2	बनरा	
67	औत्सोविक	3	बधाई	
68	औत्सोविक	4	सोहरे	
69				
70	सामाजिक	5	गडरयाउ	
71	सामाजिक	6	विदा	
72	सामाजिक	7	कछयाउ	
73	सामाजिक	8	राछरे ।	
74	सामायिक	9	मल्हारे	
75	सामायिक	10	सौरें	
76	सामायिक	11	बिलवाई	
77				
78	फागे	1	सख्याउ	
79	फागे	2	खरयाउ	
80	फागे	3	चौकढ़याउ	
81	फागे	4	छंदयाउ	
82	फागे	5	खिरें	
83	फागे	6	राहुला	
84	फागे	7	ख्यालफाग	
85	फागे	8	स्वांग	
86	फागे	9	राछरे	
87	फागे	10	दिवारी	

लोक गीत Folk Song

88	फागे	11	दिनरी	
89	फागे	12	उजैकी	
90	फागे	13	चाचरी	
91	फागे	14	अधरी	
92	फागे	15	होली	
93	फागे	16	रसिया	
94	फागे	17	खेद	
95	फागे	18	दतिया का भाउदी	
96	फागे	19	सावन	
97	फागे	20	बंजारा	
98	फागे	21	कबीर	
99	फागे	22	साखी आदि।	
100			अकुत्रि	
101	ऐतिहासिक गीत	1	रासे	
102	ऐतिहासिक गीत	2	आल्हा	
103	ऐतिहासिक गीत	3	ढोला	
104	ऐतिहासिक गीत	4	मारू	
105	ऐतिहासिक गीत	5	चौपाई	
106				
107	वीरगाथा	2	राछरे	ये ज्येष्ठ मास से श्रावण तक
108	वीररस	1	सिर्फ कडरवा ही विशेष रूप से सम्मिलित हैं	
109	वीररस	2	आल्हा भी वीर रस में आ सकता हैं	
110			अकुत्रि	
111	रूपगत	1	कथात्मक(गाथागीत)	
112	रूपगत	2	मुक्तक	
113	रूपगत	2,1	संस्कार	
114	रूपगत	2,2	ऋतुगीत	
115	रूपगत	2,3	क्रियागीत	
116	रूपगत	2,4	भक्तिगीत	
117	रूपगत	2,5	क्रीड़ागीत	
118				
119	भावगत	1	प्रेम भावना	
120	भावगत	2	राष्ट्रीय चेतना	
121	भावगत	3	भक्ति भावना	
122	भावगत	4	वात्सल्य	
123				
124	विषयगत	1	क्रियागीत	
125	विषयगत	2	संस्कार गीत	
126	विषयगत	3	ऋतु वर्णन	

127	विषयगत	4	बालवर्णन	
128				
129	जातिगत	1	समस्त जाति गीत	
130	जातिगत	2	नृत्यगीत	
131	जातिगत	3	बरेदी	
132	जातिगत	4	सैरा नृत्य, कानड़ा नृत्य, ढ़िमरयाई नृत्य, नौरता नृत्य	
133				
134	अन्य अवसर	1	विभाजन	
135	अन्य अवसर	2	आख्यान गीत	
136	अन्य अवसर	3	आल्हा	
137	अन्य अवसर	4	कार्तिक के गीत	
138	अन्य अवसर	5	ढोला मारु	
139	अन्य अवसर	6	घमी	
140	अन्य अवसर	7	सांवरी	
141	अन्य अवसर	8	पुवारो	
142	अन्य अवसर	9	पंडवा	
143	अन्य अवसर	10	सौरंगा	
144	अन्य अवसर	11	सदावक्ष	

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

साहित्य कला

 साहित्य समाज का दर्पण है, यह उक्ति लोक–समाज के लिये अत्यन्त उपयुक्त है। लोक विषय पर जब साहित्य की रचना होती है, तब वह लोक–साहित्य बन जाता है। लोक–साहित्य की रचना लोक–साहित्यकार द्वारा लोक–विषय पर लोक–हित में की जाती है।

साहित्य के दो रूप होते हैं – गद्य और पद्य। जब लोक–हित की बात आती है तो लोक–परम्परायें और साधन सर्वोपरि हो जाते हैं। साहित्य का कार्य है – भावों का शाब्दिक चित्रण करना और उस चित्रण को कलाकार रंग व कल्पना के आधार पर चित्रित कर प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार कलाकार की मौलिक अभिव्यक्ति को साहित्यकार शब्दों में बान्धकर स्थायित्व देने का प्रयास करता है। यह सम्बन्ध क्रमिक रूप से चलता रहेगा।

लोक–परम्पराओं में प्रकृति, ऋतु परिवर्तन, तीज–त्योहार, मनुष्य के जीवन के सोलह संस्कार, लोकोत्सव इत्यादि सम्मिलित हैं। इन माध्यमों में एक प्रकार का अन्तरावलम्बन होता है, जो प्रत्यक्ष रूप से मानव एवम् प्रकृति के एकात्म बोध को प्रगट करता है।

पद्य–साहित्य के अन्तर्गत लोक काव्य परम्परा में प्रकृति के बदलते रंगों का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। ''बारह मासा'' लोक–काव्य उसी का प्रमाण है। उसमें सावन–भादों में वर्षा की झड़ी, प्रकृति की हरियाली, बादलों का गर्जन है तो पौष–माघ में ठिठुरती ठन्ड, कृषि पर पड़ता पाला भी काव्य का एक अंग है। फाल्गुन–चौत्र में विहूँसता जंगल, वैशाख और जेठ में सूखती नदियाँ और नाले प्रकृति के शाब्दिक चित्रण ही तो हैं। इन्हे शब्दों से चित्रों में परिवर्तित करना कलाकार की सूझ–बूझ पर निर्भर करता है।

लोक–साहित्य में घर–आन्गन, कुआँ, तालाब, नदी, पनघट, गैल, घाट, पीपल, नीम, पहाड़, बगिया, मोर, तोता, हिरन, राम–सीता, कृष्ण–राधा, देवी–देवता दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुयें आदि सभी का शाब्दिक विस्तृत्त वर्णन प्रस्तुत किया जाता है–

– दिन की ऊंगन किरन की हेरन, सुरहिन वन को जाय मोरी माँय।	(सूर्योदय)
– हरी रे चिरैया तोरे पियरे रे पंख	(पक्षी)
– लै लो कलेवा मै ठाड़ीं पिया।	(खेत पर भोजन लेकर जाती स्त्री)
– ऊपर बादर घथरांय हो, नैचें गोरी पनियाँ को निकरीं	(वर्षा में नारी सौन्दर्य)
– गाड़ी वारे मसक दै बैल, अबै पुरवईया के बादर उनये	(वर्षा प्रारम्भ दृश्य)
– राधा खेले होरी मोहन के संग, मोरे रसिया	(होली दृश्य)
– धनुष चढ़ाये राम ने, सो प्यारे थकित भये सब भूप	(सीता स्वयंवर)
– ने मानो गगरी धर राखो लिखे हैं परेबा मोर	(गगरी पर चित्रण)
– हरे बाँस मण्डप छाये, सिया जू कौ राम ब्याहन आये	(विवाह दृश्य)

पद्य शैली में कम शब्दों में अधिक बात कहने की क्षमता होती है और गद्य शैली में विस्तृत विवरण किया जाता है। इन शाब्दिक भावों को अन्तर्मन के नेत्रों से देखकर चित्रकार चित्रण करता है।

संगीत कला

गीतं वाद्य तथा नृत्यं संगीतामुच्यते"

अर्थात् गीत वाद्य और नृत्य तीनों के मेल को संगीत कहा जाता है।

लोक गीत **Folk Song**

लोक–चित्रकला, लोक–संगीत को स्थायित्व प्रदान करने का कार्य करती है और लोक संगीत लोक–चित्रकला को वाणी एवम् भाषा से व्यक्त करने का काम करता है। दोनों की विशेषताओं में भी साम्य है–

1 इनके रचियता लोक–स्तर के कलाकार होते है।

2 इनमें लोक भावनायें, लोक के प्रतीक, लोक देवता तथा लोक आकांक्षाये सम्मिलित होती है।

3 यह दोनो लोक जीवन मे रस, आनंद और उल्लास का संचार करती है।

लोकोत्सवो पर लोक चित्रान्कन तथा लोक–संगीत दोनो का समुचित प्रयोग होता है जैसे– सुआटा के समक्ष बनाई गई अल्पनाओं मे लोक चित्रान्कन का प्रयोग किया जाता है। साथ ही तत्सम्बन्धित लोकगीत गाने की परम्परा भी है। अकुत्रि

बुन्देली लोकगीतों के अनेक प्रकार हैं – जीवन के सोलह संस्कारों के प्रत्येक चरण पर गाये जाने वाले, संस्कार गीत, देवी–देवताओं के पूजा विषयक गीत, बालक–बालिकाओं के क्रीड़ात्मक उपासना गीत, अक्ती, सुआटा, मामुलिया, टेसू, नौरता, झिन्झिया, हप्पूगीत आदि। ऋतु विषयक लोकगीत– सावन, राछरे, रावला, सैरे, भुन्जरिया, बरसाती, रसिया, फाग, दिवारी, श्रृंगार गीत – प्रेम, विरह, प्रतीक्षा, बेमेल विवाह, सोनारा मेंहदी, दादरा आदि।

हप्पू गीत

इस क्षेत्र में कहीं कहीं पर हप्पू खेलने का रिवाज है। यह हास्य व्यंग से सम्बन्धित है। इस में गाए जाने वाले गीतों में, अपने परिवार से लगाव और दूसरे परिवार की सन्कीर्णता को दर्शाया जाता है। दूसरे की खुशी में ज्यादा भागीदारी नहीं करते है। लेकिन अपने तीज त्योहारों को बहुत अच्छी तरह से मनाते हैं। जगह जगह पर क्षेत्र के अनुसार लोक गीत गाए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर एक लोकगीत :– अकुत्रि

अपनी गौर को पेट पिरानां, सारे लडुआ हप्प।
अपनी गौर के लरका भऔ, सारे लडुआ हप्प।
परायी गौर को पेट पिरानो, सारे लडुआ हप्प।
परायी गौर कौ बिटिया भई, सारे लडुआ हप्प।

इस अकेले लोकगीत में भी बिटिया का जन्म और लड़के के जन्म का अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है कि समाज उसे किस तरह से लेता है।

जातक के जन्मोपरान्त उसका संस्कार किया जाता है ? किसी माता की कितनी भी संतान हैं, यह संस्कार प्रथम संतान होने के पूर्व ही होता है, परवर्ती संतानों के होने पर माता के यह संस्कार नहीं कराए जाते हैं। इन सभी संस्कारों के अवसर पर अनेक प्रकार के लोक गीत गाए जाते हैं। यह गीत प्रायः महिलाएं गाती हैं अन्य लोक वाद्यों के साथ ढोलक का प्रयोग प्रचुरता के साथ होता है। ढोलक लगभग प्रत्येक घर में उपलब्ध है। विवाह के लोकगीत सज धज कर गाती हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है – इस क्षेत्र में राम और कृष्ण का प्रभाव इतना व्यापक है कि अधिकान्श संस्कार राम–सीता, राधा–कृष्ण के जीवन प्रसंगों पर आधारित है। हर परिवार में जन्मा बालक राम या नंदलाल या कौशल्या पुत्र या यशोदा की कोख से जन्मा सा लगता है। उसके जन्म पर वही उल्लास और हर्ष पाया और मनाया जाता है जो कभी अवध और ब्रज में छाया था। यह कहा जा सकता है कि इन संस्कारों में लोक–गायन के क्षणों में बुन्देली धरती पर ब्रज और अवध उतर आता है।

अनेक संस्कार कर्मकाण्डी पन्डितों के बजाय कोकिलकण्ठी महिलाओं के पावन स्वरों से अभिसिन्चित होते हैं। आश्चर्य यह है कि इन गीतों के गायन में रुचि रखने वाली अधिकान्श महिलाएं और पुरुष निरक्षर या अल्प शिक्षित हैं किन्तु ये लोकगीत उनकी स्मृतियों में इस तरह बस गए हैं कि पढ़े–लिखे व्यक्तियों की स्मरण शक्ति पराजित हो जाती है। आप सिर्फ उनके तार छेड़ दीजिए, फिर उनके बोल अपने आप फूट पड़ेंगे। स्मृतियों की यह अविचल और लोक

व्यापक परम्परा ही लोक संस्कृति को जीवित रखे हुए है। इन संस्कार गीतों में आचार–विधान भी व्यक्त होता है और चलता है। अकुत्रि

श्रमगीत– बौनी को रसिया, बिलवारी, दिनरी, जतसार(जो चकिया चलाने समय गाते हैं)

जातियों के लोक गीत– गड़रियाऊ, ढिमरयाऊ, कछयाऊं, धुबियाऊ, कहरव (जो कहार गाते हैं)।

शौर्य व प्रशस्तिगीत– चंद्रावली का राछरा, रानी लक्ष्मी बाई प्रशास्ति गीत आदि।

इन सभी लोकगीतों का परम्परागत संगीत होता है। वाद्यों के बिना लोक–संगीत अधूरा होता है। लोक–वाद्य चित्रकार की कल्पना और संगीतकार की आवश्यकता से निर्मित हुये लोक वाद्यों का आकार ही उनमे भिन्न भिन्न ध्वनि उत्पन्न करने मे सहायक होता है। भाषा साहित्य के विकास के साथ सर्वप्रथम देवताओं की संगीत सभा का वर्णन मिलता है। उसी के आधार पर गायक, वाद्ययन्त्र, नर्तकी सभी चित्रकार ने चित्रित किये। उन चित्रों मे प्रदर्शित वाद्य।पज को साकार रूप शिल्पकार ने दिया। लोक वाद्यों पर सुन्दरता वृद्धि तथा भावानुरूप उन पर लोक चित्रकारी भी की जाती है। लोक वाद्यों का आकार व साज–सज्जा उनकी क्षेत्रीय विशेषताओं को प्रगट करने मे सहायक होता है।

प्रमुख बुन्देली लोकवाद्य हैं–

1 बान्सुरी, तुरही, रमतुला।

ये फूँक मार कर बजाये जाते हैं।

2 नगड़िया, नगाड़ा, ढाँक, चंग, हुड़क, ढोलक, मृदंग आदि

खोखली लकडी के बने और उन पर चमड़ा चढ़ाकर बनाये जाते हैं। यह संगीत मे ताल–वाद्य के रूप मे प्रचलित हैं।

3 इकतारा, तमूरा सारंगी आदि

लोक–वाद्यों मे तार वाले वाद्य हैं –

4 झींका, मजीरा, कसेरू, चटकोरा आदि

ये घन–वाद्य है। ये अधिकान्शतया धातु से निर्मित होते हैं और परस्पर आघात से ध्वनि करते हैं

5 थाली, लोटा, पत्थर, चिमटा

ग्रामीण स्तर पर चौपालों, खेतों, लोक–देवताओं के चबूतरों पर मनोरंजक और धार्मिक लोक–संगीत का कार्यक्रम होता है। तब थाली, लोटा, पत्थर, चिमटा, आदि संगीतात्मक लय उत्पन्न करने मे सहायक बनते हैं। अकुत्रि

घुंघरू

लोक नृत्यों मे प्रयुक्त घुंघरू भी महत्वपूर्ण है। नर्तकी की वेशभूषा भी कलात्मकता का प्रभाव उत्पन्न करती है। राई नृत्य, मौनिया, सैरा आदि नृत्यों मे नर्तकी व नर्तक लोक–वेशभूषा घारण करते हैं। आधुनिकता के प्रभाव से लोक नृत्य विलुप्त होते जा रहे है चित्रकार उन्हें चित्रकला के माध्यम से चित्रित कर स्थायित्व प्रदान कर सकता है।

लोक गायन

श्री गौरी शंकर द्विवेदी जी ने प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ में बुन्देलखण्डी लोकगीतों का संग्रह तथा व्याख्या दी है। इन्होंने लगभग 500 कहावतों का संग्रह किया है। इन्होंने बुन्देल वैभव तथा सुकवि सरोज में बुन्देलखण्डी कवियों की रचनाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है और ईसुरी प्रकाश प्रथम भाग प्रकाशित की है। अकुत्रि

श्री गौरी शंकर द्विवेदी ने बुन्देलखण्ड के लोकगीतों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया।

1) सैरे	ये आषाढ़ मास से लेकर श्रावण मास के अन्त तक गाये जाते हैं।
2) राछरे	ये ज्येष्ठ से श्रावण तक गाये जाते हैं।
3) मलारे और सावन	ये श्रावण और भाद्रपद में गाई जाती हैं।
4) बिलवारी और दिवारी	ये क्वार और कार्तिक में गाई जाती हैं।
5) बाबा के या भोला के गीत	ये संक्रान्ति आदि तीर्थ यात्रा के अवसर पर गाये जाते हैं।
6) फागें और लेंदे	ये मास फागुन में गाई जाती हैं।
7) गारी	ये विवाहादि अवसरों पर गाई जाती हैं।

इनके अतिरिक्त घास काटते समय, मजदूरी करते समय, चक्की पीसते समय, इत्यादि अनेक अवसरों पर भिन्न–भिन्न तरह के गीत, भजन, दादरे आदि गाये जाते हैं।

गीतों में लोकाचारों का लेखा मिलता है। संस्कारों का हिन्दू जाति में धार्मिक महत्व है। भारतीय जीवन में मनुष्य इष्ट के पूर्ण एवम् अनिष्ट के निवारण हेतु सदा से अपने धार्मिक विश्वास के कारण कुछ कार्य विधान करता आया है। इनमें मनुष्य की सभ्यता का इतिहास छिपा हुआ है और इनके कारण सांस्कृतिक एकता का सूत्रपात होता है।

सैरा नृत्य व गायन

बुन्देलखण्ड में सावन और भाद्रपक्ष में पुरूषों के लोकगीतों में सैरों ने बड़ा महत्वपूर्ण स्थान पाया है।

इस नृत्य में 10 वर्ष से लेकर 45 वर्ष तक की आयु के 10 से लेकर 22 तक सदस्य इसमें शामिल होते हैं। प्रत्येक नृत्यकार के हाथ में 2 से 2.5 फुट लम्बी खैर या शीशम की लकड़ी होती है। इसे दाहिने हाथ में रखा जाता है। वृत्ताकार खड़े नर्तक पहले हो हो रे की टेक पर सैरा गीत शुरू करते हैं। सैरा गीत वृत्त के बीच में खड़ी गायको एवम् वादकों की मण्डली शुरू करती है, साथ ही नृत्य आरंभ हो जाता है। इन गीतों में श्रृन्गार की झान्की एवम् गोपी कृष्ण का वियोग वर्णन मिलता है। ढोलक, मृंदग और गीत की लय पर आगे–पीछे झुकते हुए नर्तक एक दूसरे से लकड़ी टकराते हुए नाचते हैं। लकड़ी की चट–चट आवाज एक अलग धुन पैदा करती है। ढोलक, नगड़िया, टिमकी, लोटा, चटकोरा, ढपला एवम् बाँसुरी वाद्य मुख्य रहते हैं। मंजीरा, चटकारे, मृदंग और लकड़ियाँ मिलकर एक मोहक संगीत पैदा करती है। अकुत्रि

साहुन सुहाने रे
साहुन सुहाने अरे मुरली बजी हो
भादौ सुहारी मोर
तिरिया सुहावन अरे जबहीं लगे
अरे खेलें पौर के दौर

सैर छंद में चार चरण और बाइस मात्राएं होती हैं, तथा बारह और दस मात्राओं पर यति होती है। ये सैरे आज भी विदिशा, सागर, छतरपुर, झान्सी, मऊरानीपुर आदि नगरों में प्रचलित हैं। कहा जाता है कि ये सैरा गीत बुन्देलखण्ड की वीर गाथाएं लेकर चलते हैं।

अचरी गायन/ अचरी या भगत

बुन्देलखण्ड में मां दुर्गा के स्तवन में गाये जाने वाले लोक गीत हैं। शारदीय नवरात्रि, तथा बासंतिक नवरात्रि में घर में चेचक निकलने पर अथवा देवी की मनौती के अन्य अवसरों पर यह गीत गाये जाते हैं। देवी के भक्तों, भैरव

तथा लांगुर के गीत लांगुरिया कहलाते है। वह भी इसी कोटि में आते है वाद्य में ढोलक, नगड़िया, झीका, मजीरा, लोटा तथा बान्सुरी आदि का प्रयोग होता है।

आल्हा गायन

जगनिक के लोक काव्य आल्ह खण्ड की लोकप्रियता सर्वविदित है। अकुत्रि महोबा के आल्हा–ऊदल के चरित्र पर आधारित महोबा–शासक परमाल तथा पृथ्वीराज चौहान के बीच हुई 52 लड़ाइयों का वर्णन इस लोक कथा में है। मूलतः यह बुन्देली का गाथा काव्य है किन्तु इसकी देशव्यापी लोक प्रियता के कारण क्षेत्रीय बोलियों में इसकी अनेक गायन–शैलियां विकसित हुई है, इनमें कन्नौजी, बैसवाड़ी, ब्रज तथा बुन्देली शैलियां प्रमुख हैं। प्रमुख वाद्य ढोलक तथा मजीरा प्रयुक्त होते है।

राछरे/साउन–

सावन के महीना में झूलों पर पैगें भरतीं महिलायें प्रायः राछरे कजरी सा साउन गाती हैं। साउन की रसभरी फुहारों के साथ यह गीत हर गांव गली में सुने जा सकते हैं। राछरे प्रायः अमान सिंह का राछरा नामक लोक गाथा अथवा कुछ अन्य के अंश गाये जाते हैं। प्रमुख वाद्य ढोलक, मजीरा आदि प्रयोग होता है।

वर्षा ऋतु में लम्बे वर्णनात्मक गीतों में राछरे बहुत प्रसिद्ध हैं। इसे बुन्देली भाषा में राछौ या राछरौ कहते हैं। जान पड़ता है इसकी उत्पत्ति रासो शब्द से हुई है यह शब्द लड़ाई–झगड़े के लिए प्रयुक्त होता है।

ये राछरे पुरूष गीत भी हैं, परन्तु मुख्यतः ये स्त्री गीत हैं। राछरे गीत झूला झूलते हुए अथवा चक्की पीसते समय भी गाये जाते हैं।

आउत देखो बारी ननदी को डोला
डोला अरी भौजी ने हन लए किबार
सुनियो ननद भौजाई को राछरो

बुन्देलखण्ड में अमानसिंह का राछरा बड़ा लोकप्रिय है। अकुत्रिये सावन के गीत होते हैं। सावन मास में सब स्त्रियाँ झूला झूल रही हैं और तब माँ पुत्री को लिवा लाने के लिए पुत्र अमानसिंह से आग्रह करती है, कि हर रोज सावन नही आता, वर्ष में केवल एक बार आता है और राजा बार–बार युद्ध का आवाहन नहीं करता, वह तो एक बार ही में जय पराजय का निर्णय कर लाता है। तुम्हारी बहिन परदेस में बिसूर बिसूर कर रो रही है, उसको अवश्य लिवा लाओ और पुत्र अमानसिंह अपनी माँ की बात मानते हुए अपनी बहिन को बुलाकर उसका भली–भाँति आदर सम्मान करता है।

इस प्रकार इन राछरों में भाई के लिए प्रयुक्त वीर या वीर रस शब्द की सार्थकता विचारणीय है। बहिन अपने भाई को शूरवीर रक्षक के रूप में मानती है। अतः यह कहना गलत न होगा कि राछरों ने बुन्देलखण्ड में बड़ी सर्वप्रियता प्राप्त की है।

सावन

श्रावण मास लगते ही कुमारियों के टोल के टोल घरों में, बाग, बगीचों में झूले डाल लेते हैं, और सुमधुर कण्ठ से निसृत स्वर आस पास के वातावरण को आनन्दसिक्त कर देते हैं। एक गीत में मनिहार(चूड़ीवाला) गलियों में चूड़ियां बेचता फिरता है, और स्त्री उसे बुलाकर चूड़ियाँ पहनती है। चूड़ी पहनते समय वह मनिहार से कहती है कि–

हरी तो जंगाली मनिहार ना पैरौ,
हरे हैं राजा जी के बाग, महाराजा जी के बाग
चूड़ौ तो मेरी जान, चूड़ौ तो हाती दांत कौ
पीरो रे जंगाली मनिहार, ना पैरों,
पीरे हैं राजाजी के वस्त्र, महाराजा जी के वस्त्र
चूड़ो तो मेरी जान, चूड़ो तो हाती दाँत को।

इस तरह वह मनिहार विविध रंग की चूड़ियाँ दिखलाता है परन्तु स्त्री उन रंगों को पति की वस्तुओं से मिलता पाकर अस्वीकार कर देती है।

बुन्देलखण्ड में एक सावनगीत में लड़की अपने पिता से परदेस न ब्याहने की प्रार्थना करती है– कहते हैं दरवाजे की इंट, दरवाजा बार–बार खोलने और बन्द करने से खिसक जाती है। अकुत्रि

द्वारे के इटियाँ न दइयो मेरे बाबुल
बिटियाँ न दइयो परदेस।
द्वार की इटियाँ खिसक जैहैं बाबुल
बिटियाँ बिसूरें परदेस।

उसका विशेष अस्तित्व नही है, क्योंकि वह कभी भी गिरकर अलग हो सकती है। उसी प्रकार परदेसिन लड़की समय पर बाप, भाई के लिवाने न पहुँचने पर बिसूर–बिसूर कर रोती है। कितना दुःखद प्रसंग है।

श्रावण मास के घुमड़ते हुये मेघ, कूँजते हुये पक्षी, शीतल मंद सुगंधित समीर, धीर वीर संयमी को विचलित कर देते है, तो सामान्य जन के ह्रदय में प्रणय हिलोरे उठना आश्चर्य नहीं।

<u>सावन के रीति रिवाज</u>

पूरा बुन्देलखण्ड को छोड़ो, पूरा भारत श्रावण माह को बहुत सुहावना समय मानता है। इस अवसर पर अनेक प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं।

बुन्देलखण्ड के लोक साहित्य में श्रृंगार की समृद्ध परम्परा है। मनोभावों की सरस अभिव्यक्ति इन गीतों में बसी हुई है। बुन्देली बालाएं अपने प्रिय के साथ इतनी तन्मय हैं कि उन्हें उन भुन्सारे चिरैया (भोर के समय सबसे पहले बोलने वाली चिड़िया) का बोलना भी प्रेम में व्यवधान लगता है। सावन में भी लोकगीत गाने का प्रचलन है।

इस महीने में बारहमासा, विरह गीत, झूला गीत, सौंदर्य बोध व अन्य गीत गाए जाते हैं। इस लोकगीत को सामान्यतया गाया जाता है।:–

काय बोली बनसा/भुन्सारे रे चिरैया काय बोली
काय बोली रे काय बोली, भुन्सारे चिरैया काय बोली।
चिरैया काय बोली रे, बड़े तड़के चिरैया काय बोली। अकुत्रि
ठन्डो रे पानी गरम कर लाई, सपरन न पाए पिया।
फिर बोली काय बोली रे काय बोली, भुन्सारे चिरैया काय बोली।
ताती जलेबा बूंदा के लडुआ, जेउन ना पाए पिया।
फिर बोली काय बोली रे काय बोली, भुन्सारे चिरैया काय बोली।
झनझन झाड़ी भरौ ठरोरे, पानी पियन न पाय पिया।अकुत्रि
फिर बोली काय बोली रे काय बोली, भुन्सारे चिरैया काय बोली।

यह कामुकता पूर्ण नारी नहीं चाहती कि उसका प्रिय किसी और को चाहे। बाग में, कुऐं ऊपर में, वह हर स्थान पर प्रिय के साथ रहना चाहती है। उसका साथ पाने के लिए, वह उसके लिए डुमरिया और मलिनिया तक बनने को तैयार है। पारस्परिक समर्पण का भाव ही पूर्ण सहयोग है व कैसा भावपूर्ण संयोग है – दर्शनीय है। यह कहा जा सकता है।

नजरिया मोई सो लगईयो।

प्रेम आर्थिक सीमाओं को नहीं देखता है। गरीब है तो क्या हुआ? क्या वह प्रेम का अधिकार छोड़ दें, कदापि नहीं। वह अपने पति को संदेश भेजना चाहती है, कागज, स्याही और कलम नहीं है तो क्या? छिगुरिया (हाथ की सबसे छोटी उंगली) को कलम बनाकर संदेश भेजने को व्याकुल रहती है। उसकी इच्छा है कि वह भी

लिखदउं दो दस बोल।अकुत्रि

प्रेयसी कितनी आशावाद और मानिनी है कि उसे प्रिय के आगमन से खेतों में डूब (डूबा – हरी दूब घास) होती दिखती है। रीते / सूखे कुवां भी भरते नजर आते हैं। यह प्रतीक विलक्षण है। वह मोतियों का चौक पूर कर, और स्वर्ण कलश की मांगलिकता के साथ प्रिय का स्वागत करने को उत्सुक है।

बुन्देलखण्ड के इस क्षेत्र में ''बाल विवाह'' तथा ''बेमेल विवाह'' की भी परम्परा है यद्यपि यह दोनों विवाह की पीड़ा बहुत कष्टदायिनी है, दयनीय है। नायिका ऐसे यौवन को आग लगाने को तैयार है, जहां छोटे बलम/पति से अतृप्त रहे। बाल विवाह सबके लिए व्यंग्य का साधन है। अपरिपक्व आयु में विवाह के परिणामों पर भी लोग चर्चा लोकगीतों में व्यक्त होती है।

यहां की नारी अपने पति को परेशान नहीं देखना चाहती है। चाहे वह अपने लाखों की संपत्ति गिरवी रख दे किन्तु सीधेपन के कारण उसके पति को कोई परेशान ना करें। यह आदर्श है बुन्देलखण्ड की बुन्देली बालाओं का, स्त्रियों का।

रिरिया हमसे कर ले औ।

गीत में व्यक्त हुआ है।

नायिका, प्रिय, जो खेतों में कृषि कार्य कर रहा है, के लिए कलेवा लेकर जाती है किन्तु उसकी तन्मयता है उसे कलेवा देखने की फुर्सत नहीं है। क्योंकि प्रियतम सामने हैं और नायिका की अधीरता दृष्टव्य है।

लै लो कलेवा मै ठाड़ीं पिया।

श्रावण मास के गीतों में विनोद भाव प्रधान रूप से झलकता है। इन सावन गीतों की यह विशेषता है कि स्त्रियों की स्वर–लहरी झूले के पेन्ग के साथ घटती बढ़ती चलती है। ये सावन के गीत बड़े ही सरस एवम् कर्णप्रिय होते हैं।

इन गीतों में पति–पत्नी के संयोग–वियोग, उनकी विरह–व्यथा, भाई–बहिन का प्रेम, ननद–भावज की कटुता तो कहीं–कहीं स्नेहपूर्ण व्यवहार का उल्लेख मिलता हैं।

<u>बिलवारी</u>

अगहन में ज्वार की फसल काटते समय स्त्रियाँ सामूहिक स्वर में गाती है यह बिलवारी गीत कहलाते हैं।

चैत की तपती गर्मी में सारा दिन कठिन श्रम करने के बावजूद काटने वाली के इन बिलवारी गीतों में परिहास युक्त उलाहना से श्रम की थकान नहीं वरन् गीत की ताजगी झलकती है।

श्रम जीवन है, जीविका है इसको चरितार्थ करती ग्रामीण स्त्रियाँ कड़कती धूप व कठिन श्रम की परवाह न करते हुये अपने पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर खेत खलिहानों में काम करती हैं।

चैत में खेत की कटाई हो रही है, दिन डूब जाने के बाद भी किसान काटने वालों को नही छोड़ता और लम्बी कतार काटने के लिए दे देता है। अपनी इस विपदा को वो निम्न गीत में प्रस्तुत कर रही है।

दिन डूबे सें धरा दई लम्बी माँग, किसान भईया
बेरा तो भई है घर जाबे की
घालो–घालो धरम के दो–दो हाथ
कठोइरा ने पीर न जानीं मोरे जियरा की — संकलित

<u>रामा</u>

बुन्देलखण्ड के इस रामा को बुआई के गीत भी कहते हैं। खेतों में बीज बोते समय स्त्रियां गीत गाती हैं, जिन्हें हम बुआई के गीत कह सकते हैं।

ए तो सासु के दोऊ बालक रोवत सारी रैन।
काइको तो रोवत सारी रैन,
भोर भए उठि– बाबू दोई, सपरन गये।
देखत सकल जहान।
कायखौ तुम सारी रैन रोये,
अरी कायखौं तो जानत सब संसार।

चैत्र की फसल काटते समय स्त्रियाँ अपने दिनरी गीतों से जनशून्य वातावरण में चिर परिचित सजीवता भर देती हैं। ये चैत्र मास में गाये जाने के कारण चैता भी कहलाते हैं।

कहने का अर्थ है कि लोक जीवन ने अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल आरम्भ से ही गीतों का सृजन कर लिया। श्रम और सुख–दुःख को भुला देने की यह युक्ति कितनी आनन्दमय, कितनी आकर्षक और सरल है।

गोदना

बुन्देलखण्ड में महिलाओं की बाहों में गोदना भी एक प्रथा थी व है। महिलाएं अपने हाथों में गोदना गोदवा कर, हाथों में मेहंदी रचाकर सौन्दर्य वृद्धि करती है। कोई भी तरीका हो, चाहे गोदना हो, मेहंदी हो, आभूषण के द्वारा हो, या कोई अन्य विधि, किसी भी स्त्री का एक ही लक्ष्य व शानदार व्रत है और वह है सौन्दर्य वृद्धि।

गुदवाने में बड़ी पीड़ा होती है, किन्तु सुन्दर बनने की ललक उन्हें यह करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है।

सावन माह में गोदना गोदवाने का रिवाज पूरे क्षेत्र में था। और अपने हिसाब से हाथों और पैरों में गोदना गोदवाती थी। उस समय इस प्रकार के लोकगीत गाए जाते थे।:–

आरी एरी गोंदे जा गुदनारी।
मोंअन पै गिरधारी। आरी एरी, गोंदे जा गुदनारी।
माथे मुकुट मुरारी लिखियो, आरी एरी गोंदे जा गुदनारी।
गालन पै लालन छइैया, आरी एरी गोंदे जा गुदनारी।
जिभिया बीच दामोदर लिखिऔ,
औठन पै बनवारी, ठौड़ी पैं गिरधारी,
का दै दैहों तुम प्यारी,
आरी एरी, जो हम गुदना गोद बसावें
का दै दैहों तुम प्यारी,
आरी एरी, उंगरिन बीच मुदंरिया दै हैं,
अरु दै हैं तन सारी, आरी एरी गोंदे जा गुदनारी।

सावन के महीने में कुन्वारी लड़कियां और सधवा मेहंदी लगाया करती हैं। मेहंदी लगाने के पश्चात 3–4 घंटे तक मेहंदी लगाए बैठी रहती है। उस समय खाली बैठे कुछ लोग गीत भी गाती हैं। मेहंदी से जुड़ी हुई अनेक प्रकार की कलाकृतियां अपने हाथ में बनवाती हैं या बनाती हैं। शाम के वक्त हाथ की मेहंदी धो डालती हैं। हाथ की मेहंदी धोने के बाद मेहंदी अपना असर दिखाती है और हाथ लाल हो जाते हैं। जो कलाकृतियां मेहंदी के द्वारा बनाई गई थी, हाथ पर उभर आती है। इस अवसर पर जब स्त्रियां मांदी /मेहंदी सूखने का दो–तीन घंटे तक इंतजार करती हैं, तब यह लोक गीत गाती हैं या इसी तरह के लोकगीत गाते हैं।:–

अग्गम मेहंदी उगी केसरिया लाल
पच्छम मोल बिकाय कै मांदी रचनू मोरे लाल।
छोटे से देवरा केसरिया लाल लियाने मेहंदी के पान (पत्ते)
ल्याऔ भौजी सिलौटी केसरिया

लाल बान्टौ मांदी/मेहंदी के पान।
कै मांदी रचनूं देवर रचावे छींगरी
नदी रचावे दोउ हात।

भजन

लोकगीत में जनता की धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति भी पाई जाती है। इन धार्मिक एवम् ज्ञान विषयक गीतों को दो भागों में विभक्त कर सकते हैं–

(1) सगुणोपासना सम्बन्धी
(2) निर्गुण गीत

सगुण गीतों में राम–सीता, राधा–कृष्ण, शिव–पार्वती, सूर्य, शीतला, गंगा, तुलसी, दुर्गा, विष्णु आदि देवी–देवताओं की महिमा और उनकी भक्तवत्सलता का गान मिलता है। यहाँ के लोग सामूहिक रूप से मेलों, साधुओं की संगतों, चन्द्रग्रहण एवम् सूर्यग्रहण पड़ने पर भजन गाते हैं। देवी–देवता के स्थान पर, तीर्थो आदि में भक्ति पूर्वक भजन–कीर्तन गाते हैं। भजन में भगवान की स्तुति रहती है।

निर्गुण लोकगीतों में गोरखनाथ, मछन्दर नाथ, कबीर, रैदास तथा भरथरी के गीत बड़े लोकप्रिय हैं। निर्गुन गीत कोरी, चमार, धोबी आदि जातियों में खूब गाये जाते हैं। इन जातियों के लोग कबीरपन्थी मतावलम्बी होते हैं। तभी इन निर्गुणी भजनों को कबीरपंथी भी कहा जाता है।

यह संसार एक धर्मशाला है, जिसमें कुछ दिनों ठहरकर जीव को अपने घर चले जाना हैं–

रहना नहिं देस बिराना है
यह संसार कागद की पुड़िया, बूँद पड़े घुल जाना है।

भारतीय अध्यात्मवाद/विदेश गए प्रियतम के विरह को साधारण ग्रामीण नर नारी कितने सरल भाव से प्रकट कर देते हैं।

फागुन फगुआ बीत गओ, हरि नहिं आये मोर,
अबकी जे हरि मोरे आहै, रंग खेले झकझोर।

निर्गुन मत के संतों का लोकगीतों पर खूब प्रभाव पड़ा है।

इस सम्बन्ध में डॉ0 चिन्तामणि का कथन है– निर्गुन संतों के विभिन्न भजनों एवम् उद्देश्यों का प्रभाव जनता पर अमिट रूप से अंकित रहा हैं। कबीर, दादू आदि सन्तों की भावनाओं के आधार पर जनता ने अपनी धार्मिक प्रवृति को प्रकट करने के लिए जिन गीतों का निर्माण किया है, वे लोकगीतों की परम्परा में आज भी सुरक्षित हैं।

भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि बड़े बूढ़े की मृत्यु पर शोक नहीं मनाया जाता है। मृत्यु आत्मा–स्थानान्तरण मात्र मानी जाती है। इसलिए किसी साधु–महात्मा अथवा वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर निर्गुणी भजन गाये जाते हैं। बाजे, गाजे झान्झ आदि बजाते हुए मृत व्यक्ति को श्मशान यात्रा हेतु ले जाते हैं। ये नारदी भजन भी कहलाते हैं। मृत्यु ही मनुष्य को परब्रह्म परमात्मा के समीप ले जाती है अतः इन्हें नारदी भजन की संज्ञा देना उपयुक्त है।

फागें

बुन्देलखण्ड में होली के त्यौहार के अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं उन्हें "फाग" कहते हैं। फागुन मास में गाये जाने के कारण इन गीतों का नाम फाग पड़ गया है। माघ मास की शुक्ल पंचमी से बसंत ऋतु का आगमन माना जाता है। इसी दिन से ग्रामीण लोग गाँवों में फाग गाना प्रारम्भ कर देते हैं और पूरे एक महीने भर चैत्र कृष्ण की

पंचमी तक ढोलक, डफ, झाँझ मजीरों की ध्वनि के साथ नर–नारी अलग–अलग टोलियों में होरी गाते और आनन्दित होते हैं।

होली भारत के प्राचीनतम त्योहारों में से एक है। इसका सम्बन्ध सामाजिक तथा कृषि जीवन से विशेष दिखाई देता है।

लोक कवि ईसुरी चौकड़याऊ फाग (ईसुरी –7.2 त्योहार में देखें) के जनक कहे जाते हैं। फाग में प्रायः चार अथवा पाँच कड़ियाँ होती हैं। एक चौकड़याऊ फाग का नमूना दृष्ट्व्य है–

> बखरी रहियत है भारे की, दई पिया प्यारे की।
> कच्ची भीन्त उठी माटी की, छाई फूस चारे की। अकुत्रि
> बे बन्देज बड़ी बेबाड़ा, जीमें दस दुआरे की।
> किवार किवरिया एकऊ नइयां, बिना कुन्ची तारे की।
> ईसुर चाय निकारों जिदना, हमें कौन उबारे की।

बसंत का महीना बड़ा मोदक होता हैं। इस ऋतु में न तो गर्मी पड़ती है और न सर्दी। मनुष्य आनन्द मग्न हो, रंग और अबीर से खेलता, गायन वादन एवम् नृत्य का आयोजन करता तथा भस्म आदि धारण कर बिहँसती प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहता है।

अक_त्रि (1) हि0 सा० का0 वृ० इति० (षोडस भाग–1, पृ337)

लोक जीवन के विभिन्न व्यापारों तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थितियों का मार्मिक चित्रण इन लोक गीतों में मिलता है। होली के दिन गाये जाने वाले गीतों में अश्लीलता अधिक होती है। इन अश्लील भावों का विवेचन हमें पौराणिक गाथाओं से प्राप्त होता है इसलिए इस परम्परा में होली के समय गाली देने आदि की प्रथा चली आ रही है।

फागों में राधा–कृष्ण, राम–सीता, शिव–पार्वती आदि पौराणिक देवों की कथाओं का स्फुट वर्णन पाया जाता है। कहीं राम, भ्राताओं सहित होली खेल रहे हैं। कहीं चारो भाई मुनि वशिष्ठ से जनकपुर के स्वयंवर में शामिल होने की सलाह कर रहे हैं। कहीं रानी कैकेई अपने वरदान माँगने के हठ पर अड़ी है जिसमें माँग की गई है।

> भरत कौ राज, शरत को गोदी, राम को दओ बनवास।

अधिकान्श फागें ब्रजचन्द, कृष्ण और राधा से सम्बन्धित है और उनमें वृन्दावन, गोकुल, नन्दगाँव और बरसाने ग्रामों का नाम आता है।

फाग के गीतों के प्राप्त सामग्री के आधार पर निम्न विभेद किये जा सकते हैं–

फाग गाने के समय दो दल विभक्त हो जाते हैं। हाथ में ढोलक, झान्झ लेकर बजाते हैं। एक अगुवा गीत की प्रथम कड़ी को गाकर प्रारंभ करता है, तब दूसरा उसको आगे बढ़ाता है। गीत की गति के बढ़ाव के साथ गाने के स्वर में वृद्धि होती जाती है और वाद्य भी गंभीर बजने लगते हैं। जब गीत चरम सीमा पर पहुँच जाता है, गवैये भावावेश में घुटने के बल खड़े होकर गंभीर स्वर में गाने लगते हैं।

<u>रसिया</u>

रसिया रास की एक विशेष धुन है, जिसे निश्चित स्वर में गाकर रासलीला करते हैं। ब्रज में इन गीतों में होली भी सम्मिलित है। वैसे तो होली राग–रागिनी का विषय है। सम्भव है कि पहले होली गाई जाती है और फिर उसमें कुछ हेर–फेर कर रसिया बना लिया गया है।अ कुत्रि

बुन्देली लोकगीत भाग–2 डॉ० राम स्वरूप श्रीवास्तव क्रमाक–41

रसिया एक श्रृंगार प्रधान गीत है। इस तरह लोकगीतों की रचना में प्रथम स्थान भाव को मिला है। इन लोकगीतों में कोई भी भावना वर्जित नही मानी गयी है और न ही उसमें कोई शास्त्रीय प्रतिबन्ध है पर प्रचलित गीतों में दो बातें सदैव मिलती हैं। पहली तो रस बोध की स्पष्ट अभिव्यक्ति और दूसरी चीज लोक–मर्यादा का संरक्षण। क्योंकि बुन्देली समाज अपनी परम्पराओं में जीवित है।

<u>दादरे</u>

शादी विवाह या किसी भी शुभ अवसर पर स्त्रियाँ दादरा गाती हैं। इन गीतों में ननद–भावज के नेगों के झगड़े पग–पग पर मिलेंगे। दादरा एवम् कहरवा क्रमशः छह व आठ मात्राओं की तालें हैं। दादरा एवम् कहरवा लोकगीत की विधाएं बुन्देलखण्ड में हैं। ये विधायें इन्हीं तालों में गायी जाती हैं। बुन्देलखण्ड में हर घर में बहू के आगमन पर दादरे का बुलौवा लगवाया जाता है।

<u>लोरी</u>

घर की बड़ी–बूढ़ी, दादियाँ तथा माताएँ शिशुओं को पालने में झुलाकर उनको प्रसन्न रखने हेतु एवम् सुलाते समय जो गीत गाती हैं वो लोरी या पालने के गीत कहे जातै हैं। बालक जब रूठ जाता है और रोने लगता है, तो उसकी माता गीत गाकर शिशु का ध्यान बँटाती हैं। बच्चे को सुलाते समय वह गाती हैं–अकुत्रि

सोजा सोजा बारे वीर,
वीरन की बलइयाँ लै लेऊँ जमुना के तीर।
बर पै डारै पालना, पीपर पै डारी डोर
जौ लौ भइया रोउन लागे, तौ नों आगई मोर।

बुन्देली लोकगीत भाग–1, डा0 रामस्वरूप श्रीवास्तव क्रमांक–5

संगीतमय माँ की ममता भरी थपकी पालन के मंथर आलोड़न के साथ शिशु के ह्रदय में आनन्द भर देती है।

बालक कितना ही रोता हो, गीत प्रारम्भ करते ही वह तुरन्त चुप हो जाता हैं। वह गीत सुनने–सुनते सो जाता हैं। ऐसे गीतों को लोरी कहते हैं।

<u>गारी</u>

बारात के खाना खाते समय स्त्रियाँ मधुर रस भीनी गालियाँ गाती हैं, जिन्हें गारीं गाना कहते हैं। किसी गीत में अवधपुरी बारात सजकर जनकपुरी आने और खाने की बात कही गयी है। किसी में षट रस व्यंजन और विविध भाँति की भोजन सामग्री का उल्लेख है और कुछ आधुनिकता की छाप लिये हुये हैं। बुन्देलखण्ड में हरदौल सम्बन्धी गारी अत्यन्त प्रसिद्ध है।

नजरियों के सामने तुम हरदम लाला रहियो

जैसी लाला अबैं निभाई तैसी सदा निभइयो

शिवजी और रामजी के विवाहों की. गारियाँ प्रसिद्ध हैं। बुन्देलखण्ड में श्रमण की गारी, सुलोचना सती की गारी, गारी में राष्ट्रीयता का पुट, रसबारी के भौंरा, भलेजू मोरी, भंवर कली, हाँ हाँ जु–हूं हूं जू आदि टेक लगाती हुई गारी भी गायी जाती हैं। कई गारियाँ अश्लील भी हैं, जिन्हें स्त्रियाँ बेधड़क लाज शरम त्याग कर गाती हैं। हरदौल के भात देने की गारी बुन्देलखण्ड में विशेष महत्व रखती है–

महासोर भओ
लाला हरदौल, भरे भात दओ
लाला की करनी कछु बरनी नही जाई,
मण्डप के नीचे सामान नहि समाई
देन दायजो सुहाई, सोवरन चाँदी जेवरात।
सब नओ नओ
महासोर भओ संकलित

<u>सोहरे</u>

बच्चे के जन्म होते ही घर स्त्रियों से भर जाता है और वे सोहरे गाने लगती हैं। इन गीतों में प्रत्येक प्रसूता स्त्री को रानी कौशल्या और पिता को राजा दशरथ माना जाता है।

अंगना में बैठी कौशिल्या रानी,	हार नोनें गो रई महाराज।
माये से बारी ननदी हँस रई,	हँस कैं बोलियो महाराज।
भौजी के हुइयैं, बारे लालन,	हार नौने लै लियो महाराज।
बइया की चूमौं हतुलियाँ,	घिउ गुर माँ भरो महाराज!
ऊँचे अटा चढ़ हेरैं बैना,	बधइयाँ की कै बजैं महाराज।
कौन घर बाजत बधाई,	कौन घर सोहरे महाराज।
बाबुल घर बजत बधाई,	बीरन घर सोहरे महाराज।

बुन्देलखण्ड में पुत्र जन्म के साथ मांगलिक कार्यक्रमों का लम्बा दौर शुरू हो जाता है। इसमें

1 भौं–लोटनी	2 कांके	3 दस्टौन	4 सरिया	5 नरा छीनना
6 पालना	7 कुआं–पूजन	8 कर्ण–छेदन	9 अन्न–प्राशन	10 मुण्डन

आदि संस्कारों का विधान किया जाता है। इन अवसरों पर स्त्रियाँ झूम–झूम कर राम–कृष्ण आदि से सम्बन्धित गीतों को गाती हैं। इन गीतों में हँसी खुशी, नेग, दस्तूर, जच्चा के खाने के सामान आदि का वर्णन पाया जाता है।

<u>जात कर्म संस्कार (जन्म संस्कार)</u>

गर्भावस्था पूरी हो जाने पर स्त्री, पुत्र अथवा कन्या जिस भी संतान को जन्म देती है, वह खुशी का अवसर होता है। पुराने समय में और वर्तमान में भी, शहर से दूर के इलाकों में, शिशु का जन्म घर पर ही होता है और होता था। कुछ समझदार, अनुभवी और होशियार स्त्रियां, जिन्हें बसोरिन कहते है, शिशु का जन्म करवाती है। इस अवसर पर इनकी भूमिका प्रमुख रहती थी। शिशु जन्म होने के पश्चात खुशियां मनाने का दौर प्रारंभ हो जाता था। नाना प्रकार के लोक गीत गाए जाते थे। इस अवसर पर विभिन्न जातियों को यथायोग्य दान देने की प्रथा थी। नंद भौजाईयों को उपहार देने की प्रथा थी। दरवाजे पर लोक कला के अनुसार सतिया बनाई जाती हैं। जन्म के समय प्रसूता को चरुआ का पानी दिया जाता था और भोजन के रूप में विशेष प्रकार का भोजन प्रस्तुत किया जाता है, जो भोजन के साथ–साथ औषधि भी थी। जन्म के समय ''सरिया'' गीत गाया जाता था जैसे

मोरे डरे डरे कहरांय,	गुविन्दा भू पै डरे।
मोरे डरे डरे कहरांय,	गुविन्दा भू पै डरे।

जाय जौ कैयो उन राजा ससुर सों, रतना दये लुटांय,
गुविन्दा भू पै डरे।
जाय जौ कैयो उन राजा जेठ सों, बजाजी दये लुटांय।
जाय जौ कैयो उन राजा नंदेउ सों, गोला दये छुटांय।
मोरे डरे डरे कहरांय, गुविन्दा भू पै डरे।

बसोरिन, जो बच्चे का जन्म करवाती है वही नरा छीलने (नाल रज्जू काटने) आती है और पुत्र/पुत्री के सगे सम्बन्धियों से विविध प्रकार के उपहार मांगती है, सभी व्यक्ति स्त्री पुरुष अपनी स्थिति व क्षमता के अनुसार ही उपहार देते भी हैं। समयानुसार लोकगीत का उदाहरण :–

कैसी मचल रई दाई, अवध में कैसी मचल रई दाई।
सुरंग चूनरी कौसिल्या लाएं ठाड़ी, बई न लैबे दाई।।
सोने का हार कैकई लाएं ठाड़ी, कूलों मरोर गई दाई। (कूल्हा मरोड़ गई दाई)
सोने की तिलरी सुमित्रा लाएं ठाड़ी, मुखई न बोलै दाई।।
मुतियन हार राजा लयें ठाड़े, नजर न फैरे दाई।
नरा तुमाओ जवई हम छीनें, दरसन दे रघुराई।।

संतान प्राप्ति ही शुभ माना जाता है। उस समय लड़की या लड़के में कोई विशेष फर्क नहीं था संतान जन्म के 12दिन तक लगातार बराबर खुशियां मनाई जाती थी / हैं।

इस समय घर से संलग्न माली लोग दरवाजे पर बान्धने के लिए बन्दनवार लाते हैं जिन्हें बन्दनवारे कहते हैं।

उदाहरण के लिए एक लोकगीत जो बन्दनवार टांगने पर गाया जाता हैः–

बन्दनवार कायें लयें जाती।
बन्दनवार कायें लयें जाती।
ओ मलिनियां कौन घर जाती।
तो मलिनीयां किते चलीं जातीं।।
मान गुमान भरी मलिनियां।
पुछंत बात भौत इठल्याती।।
बन्दनवार कायें लयें जाती।
कहै मलिनीयां ललन भये हैं।।
दशरथ सुत राजा अज के नाती।

संपूर्ण बुन्देलखण्ड में प्रसूता स्त्री के लिए एक विशेष प्रकार का जल पीने के लिए दिया जाता है। इस जल को एक नए मिट्टी के मटके में पकाया जाता है और इस पानी में विविध प्रकार की औषधियां मिलाई जाती है। इस जल का नाम चरुआ का पानी है। जिस समय चरुआ का जल बनाया जाता है उस समय एकत्रित स्त्रियां इस तरह के लोकगीत गाती हैंः–

हम तो डरे अखाड़े जौं का करें राजा। डरे= पड़े
सासू जू आमें चरुआ धरावै।।
चरुआ केचाउर चुरावें, जौं का करें राजा।
जिठानी जू आमें लडुआ बंधावें
चोली में लडुआ दुकावें जौं का करें राजा।
देवरानी आवे पच करवें
धरुअन में भात दुकावें, जौं का करें राजा।
नन्दीया आवें, सतिया धरावें
सतियन के मोती चुरावें, जौं का करें राजा।

प्रसूता के मायके से सौंठ, गरी, मेवे आदि के लड्डू आते हैं। इस प्रकार के व्यंजनों को प्रसूता ग्रहण करती है, प्रसूता को ही दिया जाना चाहिए लेकिन वे इतने स्वादिष्ट होते हैं कि कोई भी अपने को खाने से नहीं रोक पाता। घर की बड़ी बूढ़ी औरतें भी इन्हें खाने लगती है। इस संदर्भ में यह लोकगीत पठनीय है

मेरी मां ने पहुंचाए,
मेरे मायके से आए।
हो जू स सौंठ, गरी के लडुआ..... मेरे मायके से आए।
वां में से इक लड्डू मोरी सासु ने चुराए
हा हा करके पूछीं पैंया पर के पूछी
सवई तरा से हमने पूछी, उनने नई बताएं
मेरी मां ने पहुंचाए, मेरे मायके से आए।

चौकीदार से खबर करीं, तब थानेदार बुलाए।
था था करके सासु रानें, लड्डू हमने चुराए।।
मेरी मां ने पहुंचाए,
मेरे मायके से आए।

जन्म के छठवें दिन कुछ जातियों में छठी भी मनाई जाती है और कुछ लोग ''बरहो'' संस्कार मनाते हैं। इस अवसर पर नाइन, कहारिन, घर की बड़ी बूढ़ी स्त्रियां और पुरुष मिलकर तिथियां मनाते हैं इस अवसर पर कुछ इस प्रकार के गीत गाए जाते हैं:—

काहे के बिलवा डारो तौं, काहे की डारों कौहरियां।
चनन के बिलवा डारौ, गौहुंन की डारों कौहरियां।
धरी है नइनियां के हात, तो नगर बहोरो कौहरियां।
नाइन की असल छिनार, सो नंद को दिवाइ कौहरियां।
रानी लए हैं पलंग बिछाय, फेर के मंगा दो कौहरियां।
बिरन लायें हैं घुड़ला सजाय, पहुंचे हैं बहिना दरबार।

छठी

धन्न—धन्न कौसिल्या रानी, कूंख तौ अब कछु सुहाग भरी,
रानी बैठी है तखत बिछाए, उसी पे डोली पानन की।
रानी चाबे डब्बन भर पान, तमोरी बेटा संगै ल्याये,
रानी करती है भोग विलास, हलवैया संगै ल्याये।
रानी पियति है सरजू जल, नीर ढिमर को संग ल्याये,
जायें हैं लछमन राम, तौ अब कछु सुहाग भरी।

जब किसी भी परिवार में पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है तो यह एक उपलब्धि होती है। उस समय मान के रिश्तेदार, नवजात शिशु के लिए विविध प्रकार के समान लाते हैं। बच्चे की बुआ, चाचा की नंद और चाचा के मायके के लोग, बड़े भाई के ससुराल के लोग नाना प्रकार के समान लाते हैं तथा इस अवसर पर नवजात शिशु के माता—पिता, आजि, दाई आदि अपने हैसियत के अनुसार चंगेलिया बधाइ आदि लाने वालों को ससम्मान सामान देकर सम्मानित करते हैं। इस अवसर पर कपड़े, आभूषण, मिठाई, पकवान आदि दिए जाते हैं।

भैया तो मुहरईया उतार
लैले चंगिलिया दुआरे में।
खड़े—खड़े मोरी पैंया पिरानी।।
भैया हो मुहरईया उतार
गांव फिरत मोरी पैंया पिरानी।।
भैया हो मुहरईया उतार

नेगा मांगे ललन के भये कौ।
कंकना ललन के भये कौ
कौ मांगो नंदरानी, कंकना ललन के भये कौ
नेगा मांगे बुआ रानी,
गजरा ललन के भये कौ
नेगा मांगे ललन के भये कौ।

चाहे जो भी समय रहा हो, पुत्री और पुत्र के पैदा होने पर पूरी समानता कभी नहीं हो पाई, यद्यपि पिछले पुराने समय में बहुत ज्यादा भेदभाव नहीं था। फिर भी इस तरह के अवसरों पर कभी–कभी भेदभाव लक्षित हो जाता है। जब पुत्र पैदा होता है, उस समय नाना प्रकार की खुशियां मनाई जाती है। किन्तु पुत्री पैदा होने पर इसी प्रकार की कोई खुशी नहीं मनाई जाती। स्त्री पक्ष के साथ यह पक्षपात इस इलाके में भी पाई जाती है।

जब शिशु एक माह के लगभग का हो जाता है तो प्रसूता कुछ शक्तिशाली हो जाती है, उस समय बहू को घर से निकाला जाता है। उसे कुएं का पानी भरने के लिए कहा जाता है और बच्चे को बाहर निकालकर सूर्य के दर्शन कराए जाते हैं।

ऊपर बदर घहराये हो
नैंचे गोरी पानी खों निकरी।
जाय जो कईयों उन राजा ससुर सों,
अंगना में कुइया खुदाय।
बहु तुमाई पानी खों निकरी,
जाय जो कईयों उन राजा जेठ सों,
अंगना में पाटें डरायें।
बहु तुमाई पानी खों निकरी,

शिशु के और बड़ा होने पर माता–पिता और रिश्तेदार उसके लिए झूले की व्यवस्था करते हैं। उस समय बच्चे की मां, बच्चे के दाई बाबा बच्चे को झूला झुला कर सुलाते हैं। उस समय इस प्रकार की लोरियां गाई जाती है

लाल ललुआ पाजनें, मोरौ झम झम झूले।
झुलावै ललना की मैया, उनके सोने के गजरा हाथ।।
लाल ललुआ पाजनें, मोरौ झम झम झूले।
झुलावै ललना की चाची, उनके सोने के ककना हाथ।।
लाल ललुआ पाजनें, मोरौ झम झम झूले।
झुलावै ललना की बुआ, उनके सोने की गुन्जै हाथ।।
लाल ललुआ पाजनें, मोरौ झम झम झूले।

और थोड़ा बड़ा होने पर, घर से संलग्न, घर के पुरोहित को बुलाकर उसका नामकरण किया जाता है। पण्डित लोग पत्रा देखकर, जन्म लग्न के अनुसार, उसकी कुण्डली बनाते हैं और नामकरण करते हैं। इस अवसर पर रिश्तेदार और परिवार के लोग उपस्थित होते हैं। कहीं–कहीं इस संस्कार को ''खरी पटा'' कहा जाता है। इस अवसर पर भी लोकगीत गाने की प्रथा है।:–

दशरथ जू की रनिया, रामा लये कईंया।
दशरथ जू की रनिया, रामा लये कईंया।।
कौना के रामा भाई, कौना के लछमनिया
दशरथ जू की रनिया, रामा लये कईंया।
कौसिल्या के रामा भये, सुमित्रा के लछमनिया
दशरथ जू की रनिया, रामा लये कईंया।
कौन बेरा रामा भये, कबै लछमनिया
दशरथ जू की रनिया, रामा लये कईंया।
संजा बेरा रामा भये, भौरें लछमनिया
दशरथ जू की रनिया, रामा लये कईंया।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

शुभ घरी ललना राम भये है, मूल परे लछमनिया
दशरथ जू की रनिया, रामा लये कईंया।

<u>विवाह संस्कार</u>अ क ृत्रि

विवाह का किसी भी प्रदेश, देश–विदेश, सभी जगह विशेष महत्व है। यहां भी जितने भी जातियां निवास करती हैं, उन सभी जातियों में विवाह संस्कार सबसे महत्वपूर्ण होता है। हिन्दुओं के सभी संस्कारों में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा सभी जातियों, धर्मों में उल्लास पूर्वक मनाए जाने वाला संस्कार है। विवाह से ही पति–पत्नी पवित्र बंधन में बंधकर सृष्टि का आधार बनते हैं, इसलिए इसे सबसे अधिक महत्व देते हैं। यह उल्लास पर्व समय समय पर कई चरणों में एक लंबी अवधि में पूरा होने वाला संस्कार है। यह सगाई (फलदान) से लेकर लगून (लगन), मटयानो, बाबू मूंदवों, हरदी, तेल चढ़ावौ, अरगौ, मड़वा, चीकट, साजन, चढ़ाव, भांवर, कन्यादान, पांव–पखराई, धान बुआई, ज्योनार, कुवंर कलेवा, कंगन छोरवो (छुड़ाना), गूंज छोरवो, डलिया सजावो, विदा, शगुन, चिरैया आदि क्रमिक चरणों में पूरा होता है। इसके अलावा अन्य रीति भी हैं जो इन शादी ब्याह के बीच में होती है या छोड़ दी जाती है।

विवाह संस्कार में मुख्य रिवाज

1	लगुन अकुत्रि
2	साँझी
3	बागा सिलाई
4	वर की खोज
5	बनरा–बनरी
6	बारामासी
7	गारी
8	माता पूजन
9	मटियानौ
10	अरगौ
11	बीदौरी
12	अलगोजा
13	विरहुल
14	संजूना
15	हल्दी–तेल के गीत
16	कूकरा
17	मेंहदी
18	मड़वा मण्डप
19	भात–चीकट
20	विनायकी
21	दूल्हा निकासी
22	गौरेयाँ–जुगिया
23	ऊबनी के गीतअकुत्रि
24	द्वारचार–टीका
25	चढ़ाव के गीत
26	सुहाग लेने के गीत
27	भाँवर के लिए दूल्हे का आगमन

1	लड़की को देखना		
2	सगुन/गोद भरना या ओली भरना		
3	सगाई		
4	सुतकरा		
5	पक्कयात/ फलदान या टीका चढ़ना तत्पश्चात लगुन		1
6	मटियानौ/धानदरैती(दरैती–चकिया)हल्दी		9
7	छेई का बुलौआ		
8	भात माँगना व भात–चीकट		19
9	अरगौ/उबटन व अरगेवारी		10
10	हल्दी–तेल		15
11	मड़वा मण्डप		18
12	राछरी		
13	निकासी/दूल्हा निकासी		21
14	बारात		
15	अगवानी व मिलन		
16	टीका/फेरा/भावर		24
	पलकाचार		
17	वरमाला		
18	चढ़ाव व मांग भराई		25
19	सुहाग मागवौ		26
20	भाँवर एवम् गठजोड़ी		29
		दूब भाँवर	
		घूरी भाँवर	
21	पैर पखराई		30
22	वर द्वारा वधू की मांग भरना		
23	कोहवर(लहकौरी की रीति)		
24	जेवनार करवाना एवम् गारी गाना		7

लोक गीत **Folk Song**

28	कन्यादान
29	भाँवर गीत
30	पाँव पखरई का गीत
31	धान बुआई
32	माड़ें पूजन का गीत
33	ज्योनार के गीत अकुत्रि
34	दातुन
35	ज्यौनार गारी
36	विवाह के अन्य अवसरों के गीत
37	कन्कन–बन्द छोड़ना
38	कुँवर कलेवा के गीत
39	दायजा सौंपने का गीत
40	मुँह मड़ई
41	समधी की विदा
42	डलिया–विदा लड़की की
43	गैल रोकने का गीत
44	बहू–बेटा लेने का गीत
45	सुहाग रात के गीत
46	दादरे
47	बुन्देली बन्ना गीत

25	कुँवर कलेवा एवम् जूता चुराई		38
26	धान बुआई		31
27	रास बँधावा		
28	दैर छपौ		
29	दहेज देना		
30	डलियाँ		
31	विदाई		
32	सरबत		
33	देवी–देवताओं का पूजन एवम् द्वार प्रवेश		
34	मुँह दिखायी/निहारन व मौचायनौ		
35	कन्कन छूटना एवम् मछली मारना		37
36	सुहाग रात		45
37	दसवारी मांय		
38	चौथी चलाना		
39	गौना		
40	रोटी छुलाई व बहू का नामकरण		

जब लड़की का विवाह होता है, उस समय प्रथम संस्कार लड़की के घर में लगुन (लग्न) लिखने का होता है। पण्डित आकर पंचों के सामने लग्न पत्रिका में लग्न लिखता है और वह लग्न पत्रिका लड़की के गोद में रखी जाती है। तत्पश्चात नाई के द्वारा लड़के वालों के यहां भेजी जाती है। जिस समय यह कार्यक्रम चल रहा होता है उस अवसर पर अनेक लोक गीत गाए जाते हैं।:– अकुत्रि

आज मोरी बेटी की लगुन लिखत है।
अब प्रभु तुम मोरी रखियो लाज।।
सब कछु नो नो हो जाए।
बिगरै न कोनउ काज।।
जो तो विधना ने लिख दीने।
बेटी सौंपो पराए हाथ।।
सब मिल इको ब्याव कराओ।
अपने घर को जावे साज।।

कोरे कोरे कागज मँगाओ राजा बाबुल / बुन्देली
कोरे कोरे कागज मँगाओ राजा बाबुल
सो सुध बुध लगुन लिखाओ हो रम्मा।
सुरन गौ को गोबर मँगाओ राजा बाबुल
सो ढिकधर(किनारे तक) अँगन लिपाओ हो रम्मा।
गज मोतिन के चौक पुराओ राजा बाबुल
सो कंचन कलश धराओ हो रम्मा।
चंदन पटरी डराओ राजा बाबुल
सो अमृत अरग दिबाऔ हो रम्मा।
पाँच सुपारी हरदी की गाँठें राजा बाबुल
सो मुहर अढ़ाई डराओ हो रम्मा।
सुरन गौ कौ गोबर न पूजै मोरी बेटी।

सो गौआ कौ गोबर मँगाओ हो रम्मा।
गज मोतिन के चौक न पूजै मोरी बेटी
सो चून के चौक पुराओ हो रम्मा।
कंचन चौक न पूजै मोरी बेटी
सो माटी के कलश धराओ हो रम्मा।
चंदन पटरी न पूजै मोरी बेटी
सो छेवले की पटरी डराओ हो रम्मा।
अमृत अरग न पूजै मोरी बेटी
सो गंगाजल अरग दिवाऔ हो रम्मा।
सोने की मोहरें न पूजै मोरी बेटी।
सो रूप रूपैया डराओ हो रम्मा।

<u>वर</u>

इन वारे बनरे की लगुन हो आई / बुन्देली
इन वारे बनरे की लगुन हो आई।
लगुन हो आई बागन बिलमाई।
सो होती आवाजें आजुल दरवाजें,
रानी आजी के द्वारें।
इन वारे बनरे...
सो होती आवाजें बाबुल दरवाजे
रानी मैया के द्वारे।

लग्न के पश्चात तेल चढ़ाने का रिवाज है। इस अवसर पर घर की औरतें व नाइन तेल चढ़ाने की रीति का पालन करती हैं। इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है

राम जी चढ़ गयो तेल फुलेल
छुटक रही पाखुरिया।
गण लंका से सोनो मंगायो
गणेश जी की बेंदुलिया।
मीराबाई तेल चढ़ावे
जगदीश जू की बेंदुलिया।
राम जी चढ़ गयो तेल फुलेल
छुटक रही पाखुरिया।

हरद कहै पियरी आरौ मौहे
मोय बिन काज न होय
ऐसी भाभी लाड़ बहुरिया
नित उठ बनियां के जाय
सेर नवै तरवरी चढ़त, हरदी सरकत जाय
हरद कहै पियरी आरौ मौहे

विवाह की तैयारी को देखते हुए "अरगना" का कार्यक्रम होता है। इस कार्यक्रम में रिश्तेदारों के अलावा मोहल्ला, पड़ोस की औरतें आमंत्रित की जाती हैं और उन्हें विवाह के कार्य सौपें जाते हैं तथा विविध औरतें अपने अपने कार्य को लेकर कार्य करना प्रारंभ करती हैं। इस अवसर पर यह लोग गीत गाया जाता है।:—

उठ धनरी मेरी चंद्रा हो बदनी,
करमा रची हो नौनी बीघरिया।
तुमरी बीहरिया हमें ना सुहावै,
हमारे बिरन बसे परदेसा में।
कायथ बुलाऊं, पतियां लिखाऊं

गोरी धन के बिरन बुलइयों।

बुन्देलखण्ड में हरदौल को एक विशेष देवता माना गया है। हर बहन, अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर हरदौल को न्योता देने आती है और हरदौल से प्रार्थना करती है कि वे उसकी पुत्री के विवाह में हर प्रकार की सहायता करें, जिस प्रकार से एक भाई अपनी बहन की सहायता करता है। इस अवसर पर यह लोग लोक गीत गाया जाता है:–

पवन के हनुमत हैं रखवारे, बिहिर के हनुमत हैं रखवारे।
आंधी बिहिर जे बन्द करत है, लज्जा के राखन हारे।
हमाये हनुमत बाबा ऐसे गजत हैं, जैसे इंद्र अखाड़े।
हमाये हनुमत बाबा हैं रखवारे, बिगरे काज संमारे
पवन के हनुमत हैं रखवारे,
हमाये हरदौल लाल ऐसे पुजत हैं, जैसे इंद्र अखाड़े
पवन के हनुमत हैं रखवारे,

विवाह के आगमन पर लड़की वालों के यहां ''मड़वा'' संस्कार होता है। इस अवसर पर समाज के, गांव घर के लोग, वह परिवार जिनके लड़की हैं, के पांच परिवार के लोग ''मड़वा'' बनाने और ''मड़वा'' गाडने का कार्य करते हैं। बढ़ई ''मड़वा'' बनाने का कार्य करता है। बान्स और लट्ठों के सहारे ''मड़वा'' बनाया जाता है। ''मड़वा'' को आम और जामुन के पत्तों से छाया जाता है। जिस स्थान पर ''मड़वा'' गड़ता है, वहां पर गाय के गोबर से लीपा जाता है। चूने से चौक पूरी जाती है। ''छियुल'' (ढाक / पलाश) के लकड़ी का खंभा लगाया जाता है। गौर स्थापित की जाती हैं व कलश रखा जाता है और इस तरह ''मड़वा'' कार्य संपन्न होता है। जिस समय यह कार्य चल रहा होता है, उस समय बाकी उपस्थित स्त्रियां निम्नलिखित लोक गीत गाती हैं:–

सुगर बडैया, चंदन मडवा, रुच रुच के गढ़ ल्यायो रे,
रोपौ फूफा ने जामुन, जामुन के पत्तन सों छाऔ रे।
सौनें की झारी बुआ भर ल्याई, छप्पन भोग लगाऔ रे।
देउ देउतन, सुमिर मनई मन, जरुमिल मंगल गाऔ रे।

प्रत्येक लड़की के विवाह में लड़की का मामा चीकट लेकर आता है। सबसे पहले बहन अपने भाई को विवाह का न्यौता भेजती है। उससे अनुरोध करती है कि ससुर के लिए पाग पिछौरा, सास के लिए साड़ी, लड़की के लिए लहंगा चुनरी और जेठ के पिछौरा तथा जेठानी के लिए साड़ी लेकर आना। उसके साथ अनाज, गुड़ की बट्टी आदि भी साथ लाना। इस अवसर पर यह लोग गीत गाया जाता है:–

एक

चिठिया लिखरई बहिन बिरन कौं।
बिरन मोरें भात लियाइयों
ससुरा को ल्याइयों भईया पाग पिछौरा,
सासों मोरी बड़ी रंगीली, लैंगा हरौ रंगाइयों।
बिरन मोरें भात लियाइयों
जेठ कों ल्याइयो भईया पाग पिछौरा,
जिठनी मोरी बड़ी रंगीली , चुनरी लाल रंगाइयों।
बिरन मोरें भात लियाइयों

दो

सवा सेर सतुआ, ऊपर गुरकी बटी
भतइन भात संकोच भरी
भतइन भारी भीर परी

<u>बन्ना–बन्नी</u>

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

विवाह संस्कार सभी संस्कारों में सर्व प्रसिद्ध तथा सर्वाधिक प्रचलित है। बुन्देलखण्ड में इन सभी कार्यक्रमों से संबन्धित अवसर– प्रसंगानुकूल लोकगीत स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं। विवाह की बात पक्की हो जाती है। इस अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा लड़के को फल, मिठाई, पैसा आदि दिया जाता है जिसे पक्कयात/ फलदान या टीका चढ़ना कहते हैं। इसके पश्चात् शुभ मुहूर्त पर लगुन–रस्म पूरी की जाती है। यहाँ से वैवाहिक कार्यक्रम विधिवत प्रारम्भ हो जाते हैं। लगुन के दिन से ही लड़का और लड़की को बन्ना–बन्नी अथवा बनरा–बनरी कहा जाने लगता है। वर–कन्या दोनों पक्षों के यहाँ उनके विवाह से संबंधित गीत गाये जाने प्रारम्भ हो जते हैं। लड़के–लड़की को पीठे/पीढ़े पर बिठाकर बहन, भौजाई, गाँव घर की पांच सात कन्याएं तेल–हल्दी चढ़ाती हैं तथा गाती हैं। वर पक्ष की ओर बन्ना गाये जाते हैं। इन गीतों में बन्ना के साज श्रृगार का वर्णन रहता है। पचरंगी पनरथ, पचरंगी कंकन, सब वस्तुयें पचरंगी शोभित हो रही होती हैं। किसी गीत में माली से बन्ना को सेहरा पहनाने, भावज से सुरमा लगाने, तमोली से बीड़ा लगाने, सुनार से कुन्डल बनाकर पहनाने का आग्रह किया जाता है। वर पक्ष में तिलक, सगुन, मौर वस्त्र धारण, हरदी, मातृ पूजा आदि के गीत होते हैं।

विवाह के अवसर पर, बन्नी की खुशी के लिए बनही अथवा बन्नी गीत गाए जाते है। सभी स्त्रियां जो कन्या पक्ष की होती हैं, इस प्रकार के गीत गाती हैं:–

रुनक झुनक बेटी मण्डल डोले, आजुल लगे हैं उठाय।
कै मोरी बेटी तुम सांचे की ढ़ारीं, के गढ़े हैं चतुर सुनार।।
न आजुल मैं सांचे की ढ़ारी, ना गढ़ी चतुर सुनार।
माता की कुखियां जनम लयें हैं, रूप दिये है करताल।।

दो

मेरी हरयाली बन्नी, मेरी सहजादी बन्नी।
लड़की वालों ने आके हमला किया।।
माल सब भरकर ले गए, बन्नी को ब्याह के ले गए।
सभी को रोते छोड़ा।।
मेरी हरयाली बन्नी, मेरी सहजादी बन्नी।
बन्नी के ससुरा ने, बन्नी के जेठा ने आके हमला किया।
माल सब भरकर ले गए, बन्नी को ब्याह के ले गए।।
सभी को रोते छोड़ा।।
मेरी हरयाली बन्नी, मेरी सहजादी बन्नी।

कन्या की शादी में सबसे पहला कदम नेग होता है, वह चढ़ाव चढ़ाने का होता है। वर पक्ष के लोग कन्या के लिए विभिन्न प्रकार के आभूषण लाते हैं। वर पक्ष के बड़े बूढ़े सयाने लोग, कन्या पक्ष के बड़े बड़े सयाने लोगों को चढ़ाव का सामान सौपते हैं। बाद में वही सामान पहनकर, लड़की मण्डप के नीचे आती है। इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है:–

सिया जू को चढ़त चढ़ाव, जनक दशरथ मोह रहे।
कानन के तरका, पेटी अजब बनी, बिंदिया रतन जड़ाव।।
सिया जू को चढ़त चढ़ाव, जनक दशरथ मोह रहे।
हाथन कौ कंगना अजब बनौ, झुमका है रतन जड़ाव।।
सिया जू को चढ़त चढ़ाव, जनक दशरथ मोह रहे।
कम्मर कौ करधन अजब बनौ, गुलूबन्द है रतन जड़ाव।।
सिया जू को चढ़त चढ़ाव, जनक दशरथ मोह रहे।
छांगल बहुतइ ही अजब बनौ, पौचीं हैं रतन जड़ाव।।
सिया जू को चढ़त चढ़ाव, जनक दशरथ मोह रहे।

विवाह में दूसरा नेग भांवर का होता है। भंवर का तात्पर्य है – लड़के और लड़की मण्डप का सात चक्कर लगाते हैं। कुल मिलाकर 7 भांवर पड़ती हैं। यह कार्य दोनों पक्षों के पुरोहित पूरा कराते हैं। इस समय यह गीत गाया जाता है:– अकुत्रि

पैली भांवर के परतई, भौजी मन मुसकाई।

दूजी भांवर के परतई, माई मन सकुचाई।।
तीजी भांवर के परतई, बिरन की आंखें भर आई।
चौथी भांवर के परतई, सखियन खुशी मनाई।।
पांची भंवर के परतई, बहना मन सकुचाई।।
छठई भांवर के परतई, मैना मन बिलखाई।
सातवें भांवर के जब परी, बेटी भई पराई।।

भंवर के पश्चात कन्यादान और पढ़ाई की रीत संपन्न होती है कुन्वारी कन्या को देवी का रूप स्वरूप माना जाता है इसलिए उसके पैर पूजना परम कर्तव्य है और उसको उपहार दिए जाते हैं जिस समय पकराई पांव पकराई की रीत सम्पन्न होती है उस वक्त कुछ इस तरह का लोक गीत गाया जाता हैः–

बिच गंगा बिच जमुना, तीरथ बड़े हैं पिराग।
जहां बिच बैठे बाबुल मोरे, देत कुआरन दान।।
तुम जिन जानो बाबुल मोरे, हमरो दियो गिर जाए।
तुमने दओ हमने पायो, गहरी गंगा नहाव।।
गैंयन को दान रोज होत है, बाबुल धवरिया नईं होय।
गौअन दान बाबुल, भाट, भिखारी, धीवरिया दूल्हा, दामाद।।
कायकौं बाबुल गंगा को जैंहों, कायकौं तीरथ पिराग।
मडवा नैंचे बाबुल गंगा बहत है, उतई है तीरथ प्रयाग।।

कायको बड़वा के

कन्यादान के पश्चात, ''धान बुवाई'' की एक रस्म होती है। कठुए के पात्र में धान अथवा चावल भरे रहते हैं, जिसे लड़का अपने पैर से लुढ़काता है। इस नेग का आशय यह है कि लड़का अपने परिवार का व्यय भार उठाने के लिए कोई रोजगार की बात सोचें ताकि उसका जीवन सुख से व्यतीत हो सके। इस अवसर पर लोकगीत गाया जाता हैः–

धान बौऔ, बिरन धान बौऔ।
जासैं बहिन धनपंती होय।।
दूध सींचों, भौजी दूध सींचों
ननद पुतबंती होय।।

''धान बुवाई'' नेग के पश्चात वर कन्या पक्ष का सदस्य बन जाता है। उसे कुछ समय के लिए माय भरने वाले कमरे में ले जाया जाता है, जहां बाती/बत्ती मिलाई जाती है। इस अवसर पर दरवाजे के बाहर खड़ी स्त्रियां निम्न लोकगीत को गाती हैंः–

भांवर पर गई, बांती मिलावे, भीतर लिवाये जाय।
बाती तुम्हें ताती लगत है, अम्मा ने दऔ है सिखाय।
भांवर पर गई, बान्ती मिलावे, भीतर लिवाये जाय।
कंचन थार कपूर की बाती, एकई दइयो मिलाय।
भांवर पर गई बान्ती मिलावे, भीतर लिवाये जाय।
जौ बाती ना हमें ताती लगत है,
ना अम्मा ने दीन्हों सिखाय।
कि बाती मिलाए कुछु नेग मिलत है,
एकई में दइबे मिलाय।
भांवर पर गई बान्ती मिलावे, भीतर लिवाये जाय।
लाला बाती मिलाई, तुम्हें घोड़ा दइबे
अम्मा कों दइयो पकड़ाय।अकुत्रि

रिश्तेदारों, गांव घर समाज को प्रसन्न करने के लिए, विवाह में प्रीतिभोज का आयोजन होता है। इस अवसर पर नाना प्रकार के व्यंजन अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन खाने के लिए परोसे जाते हैं तथा नाना प्रकार की गारिया

(गालियां) गाई जाती है। इस लोकगीत में उस समय की जो स्थितियां थी या जो भोजन वगैरह तैयार होता था, उसका एक प्रदर्शन मात्र हैः–

आतर परसी, पातर परसी परस दई दुनियां।
निबुआ परसे, अथाने परसे, परस दई अमियां।।
भटा परसे, रतालू परसे, परस दई घुईया।
पूरी परसे, रतालू परसे, परस दई घुइयां।।
माड़े जौ परसे झम्मक झूला।
भर गई पातर, उलंग गए दोना।।
खांड़ जो परसी, मुट्ठी बगराई।
ऊपर घी की धार लगाई।।
घी जौ परसों, तुरत को ताजौ।
सबरी सभा में जाय महकानौं।।

प्रत्येक विवाह के अंतिम दौर के समय, लड़के को कलेवा कराया जाता है। इस अवसर पर लड़का जिद करता है और ससुराल वालों से कुछ मांगता है। कभी–कभी उसकी इच्छा पूर्ति हो जाती है और अगर मांगने वाली चीज सामर्थ्य में नहीं है तो कभी कभी नहीं भी। जिस समय कलेवा हो रहा होता है, उस समय यह लोक गीत गाया जाता हैः–

लाला करो कलेवा जल्दी,
हो रही तुमें अबेर
तुमें जौ कछु दे नईं पाये
दैहैं अगरी बेर. . .
लाला करो कलेवा जल्दी,
हो रही तुमें अबेर

कुन्वर कलेवा के पश्चात "कंगन" एवम् "बन्द" छोड़ने की रस्म होती है। इसमें लड़का छल्ले में बंधे हुए कंगन की गांठ को छोड़ता (खोलता है गांठ छोड़ना मुश्किल सा होता है) है। इसका अर्थ यह भी लगाया जाता है कि अगर लड़का गांठ छोड़ देगा/ खोल देगा तो वह परिवार की विषम परिस्थितियों को समझ कर उसको पार कर लेगा और अपने गृहस्थ जीवन को ठीक से चला पाएगा और पूरी जिंदगी साथ रहेगा। इस समय यह गीत गाया जाता हैः–

लाला हंसी खेल नईआ कंकण को छोरबौं,
जो है नईंया धनुष कौ टौरबौ,
हंसी खेल नईआ कंकण को छोरबौं
कंकण की गांठ लागी लाला मजबूत,
तुम हौं दसरथ के सपूत, तुमरी देखें करतूत,
हंसी खेल नईआ कंकण को छोरबौं
जौं है नईयां मारीच कौ मारबौ,
हंसी खेल नईआ कंकण को छोरबौं

जब लड़की विदा होने लगती है, उस समय विशेष प्रकार की खाद्य सामग्री, पकवान आदि डलिया में रख कर दिए जाते हैं। उस समय बारात पैदल या बैल गाड़ियों से आती जाती थी, अतः आने जाने में काफी समय लगता था, इसलिए सूखा आहार जिसे बिना पकाए खाया जा सकता हो, दिया जाता था। उस समय विशेष प्रकार की खाद्य सामग्री, पकवान आदि डलिया, जो बान्स की बनी हुई होती है, में रख कर दिए जाते हैं। उसमें हल्दी का लेपन किया जाता है, जिसका एक स्वयं में वैज्ञानिक महत्व है। इसके अतिरिक्त पान, सुपारी, हल्दी की गांठ, पांच मोहरें और पड़ोस की सब औरतों को आमंत्रित करके उसमें बड़े–बड़े गूंजा, मेवा के लड्डू, माय, शक्कर के माडे, गोठदार, बड़ी–बड़ी पुड़िया, एक फूले (कांसा –एक तरह का धातु) के बेला (लोटे) में शक्कर, एक कटोरी में घी रखा जाता है। फिर उस समरोटी को लाल रंग के कपड़े में रखकर लड़की को विदा किया जाता है। इस समय यह गीत गाया जाता हैः–

सिया जू की डलिया, खूब सजाई।
काहे की डलिया, काहे की डलिया, कौंना ने मंगाई,

हरे बान्स की डलिया, मोरे बाबुल ने मंगाई
सिया जू की डलिया, खूब सजाई।
काहे से टिपवाई बान्कों, कौंना ने टिपवाई।
हरदी से टिपवाई बान्कों, फूआ ने टिपवाई।।
पांच सुपारी हरदी गांठें मुहरें पांच धराई।
सिया जू की डलिया, खूब सजाई।
पुरा पुरोसिन सबरी आई, गोजा पिरा के खूब सजाई।
मेवा के लड्डुवा, शक्कर के माठे, गुड़वा पूरी बनवाई।।
सिया जू की डलिया, खूब सजाई।
खांड भरे कांसे के बेलन, धी की बिलिया धरवाई।
और सवा गज टूम मंगाई, वा में डलिया बन्धवाई।।
सिया जू की डलिया, खूब सजाई।

विवाह के अंतिम रस्म ''विदा'' होती है। इस अवसर पर कन्या पक्ष के सभी लोग रोने लगते हैं। भावुक होकर स्थानीय औरतें बिटिया को आशीर्वाद देती हैं और उसके सुखी रहने की कामना करती है।अकुत्रि इस समय भी गीत गाने की प्रथा है और थी फिर भी विदा गीत उपलब्ध तो है हीः–

जाओ लाली तुम फलियों फूलियो।
सदा सुहागिन रहियो मोरी लाल।।
एक बात हम तुमसे कहत हैं।
चित्त दै सुनियो मोरी लाल।।
सास–ससुर की सेवा करियौं।
पति की पूजा करिऔं मोरी लाल।।
देवरानी जिठानी से हिल मिल रइओ।
नंदी के एंगर रईओ मोरे लाल।।
पैदा करके वे जित्तौं लियावैं।
उत्तैई में गुजर चलइयो मोरे लाल।।

जहाँ वर पक्ष के गीत दूल्हा की सजावट, बरात की धूमधाम, शान–शौकत के होते हैं, वहाँ कन्या पक्ष के गीत हृदय को द्रवित करने वाले होते हैं। एक गीत में बेटी ससुराल जाने वाली है, वह कहती हैं कि हे बाबुल मैं चली जाऊंगी, तो तुम्हारा घर सूना हो जायेगा पर पिता दो दूक उत्तर देता हैं–

बाबुल तेरो चौका जो सूना रे, बाबुल तेरी धीय बिना।
बेटी बामनी लगाय लूंगौ री, तज घर जाओ आपने।

+ बामनी– गरीब ब्राह्मण की पत्नी उस समय की ब्राह्मणों की स्थिति प्रदर्शित करती है।

कन्या के यहाँ तिलक, संझा, हरदी, लावा भुजाई, मातृपूजन, भांवर, सोहाग, द्वार–रोकने, भात, उबटन, विदाई, कंगन खुलाई आदि के गीत होते हैं।

अंत्येष्टि संस्कार

यह एक कटु सत्य है। मृत्यु सबकी होती है, व्यक्तित्व जिन्दा रहता है। मर जाने के बाद भी उसकी स्मृतियां हमारे दिमाग में सदैव या सत्य कहे कुछ समय ही रहती हैं और अधिकान्श समय तक रहती हैं। हम आज भी अपने परिवार की स्त्रियों और पुरुषों के नामों को याद रखते हैं, चाहे वह दादा दादी, नाना नानी, मां बाप, मामा मामा। अकुत्रि कोई भी क्यों ना हो उनकी अच्छी और बुरी बातें खाली समय में बातें करते समय याद आती हैं। मृत्यु के अवसर पर भी संवेदना प्रकट करते समय संवेदना के कुछ गीत गाए जाते थे, जो वर्तमान में पूर्ण तरह बन्द है। कुछ एक उपलब्ध है, जो कुछ इस तरह के हैंः–

राम राम निज सैया

उलटी सांस चलत ऊपर सो, जेहल ठरत नइयां।
उलटी कील लगी पिंजरा को, उड़ गई संकत गुनईयां।
चार हाथ आंगन लिपवा लौ, तो को भूपै धरो भैइया।
बामन बुलवा दान करा दै, और संकलप गंइया।
चार हाथ कपड़ा मंगवा दै, ढ़ाक देऔ अब मूइयां।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जौ कौ अपनौ नइयां।

तमूरा भजन

तमूरा (इकतारा) पर पारम्परिक शब्द बानी, भजन, कबीर पंथी भजन अथवा धार्मिक चरित्रों पर आधारित लोक गाथायें गाने की परम्परा अब विलुप्तोन्मुख है।

प्रमुख वाद्य तमूरा, ढोलक, कांसी, झीका तथा चंग हैं। कहीं–कहीं लोक भजन या चरित्र सुनकर लोग नृत्य भी करते हैं।

ढीमरया राग

ढीमर जाति के परम्परागत लोक गीतों का ही नाम ढीमरिया राग है। प्रमुख वाद्य खंजरी, लोटा, नागड़िया, ढोलक, तुरही प्रयोग होते हैं।

संस्कार गीत

बुन्देलखण्ड में शिशु जन्म के पूर्व से मृत्यु तक सोलह संस्कारों द्वारा व्यक्ति को संस्कारित करने का लोक विधान हैं। प्रत्येक संस्कार के अवसर पर गीत गायन की परम्परा है। इनमें शिशु जन्म तथा विवाह संस्कारों के विभिन्न चरणों में महिलाओं द्वारा गीत गाये जाते हैं। अकुत्रि कहीं–कहीं इन गीतों के साथ नृत्य का भी विधान है। वाद्य ढोलक, रमतूला तथा कसेरु प्रयुक्त होते हैं।

श्रृंगार गीत

बुन्देली लोक साहित्य में श्रृंगार गीतों की समृद्ध परम्परा है। इन गीतों में प्रेमी मन के सहज भावों की अभिव्यक्ति मिलती है।

सुआटा

कहा जाता है कि सुआटा नामक राक्षस कन्याओं का अपहरण किया करता था। कन्याओं ने पीड़ित हो पार्वती जी का नौ दिन का व्रत रखा, तब पार्वती जी ने प्रसन्न होकर सुआटा का वध कर कन्याओं की रक्षा की। नौरात्र/नवरात्र के प्रथम दिन मिट्टी का नौरता मनुष्य आकार में दीवार के सहारे स्थापित किया जाता है। अकुत्रि पास में ही शिव–पार्वती की आकृति बनती है। प्रतिदिन गौर बनाकर उनकी पूजा की जाती है। सुआटा के दायें–बायें चन्द्रमा सूरज बनाते हैं प्रतिदिन प्रातः काल बालिकायें पूजा कर गीत गाती हैं–

नौ दिन खेलो बेटी नौरता, नारे सुआटा
दस दिन करहु उपास,
दसैं दसेरो वितीओ, नारे सुआटा
बीसवें दिवारी होय।

मामुलिया

बुन्देलखण्ड की कुमारी बालिकाएं भादो मास में (कहीं–कहीं क्वार के कृष्णपक्ष) में भी मामुलिया के गीत खेल करती हुई गाती हैं। यह सन्ध्या समय खेला जाता है। आंगन के बीच गोबर से चौकोर लीपकर और चौक पूरकर बबूल की कांटेवाली हरी शाखा लगा दी जाती है– यही मामुलिया है। हल्दी और अक्षत से पूजा करके कांटों में फूल खोस

दिये जाते हैं, भुने चने, ज्वार के फूले, फूट, कचरिया आदि का प्रसाद चढ़ाकर बालिकाएं उसकी परिक्रमा लगाती हैं। इसके लिए कोई तिथि या वार निश्चित नही होता है। बाद में उसे उखाड़ कर किसी तालाब या नदी में सिरा/बहा देती हैं।

गोट

पशुपालक जातियों द्वारा पशुरक्षा के निमित्त प्रार्थना के लिये लोक देवता कारसदेव, मैकासुर या हीरामन के चबूतरों पर उन्हे प्रसन्न करने के लिए गोटें गाई जाती हैं। अकुत्रियह लोकगाथा के रूप में होती हैं। प्रमुख वाद्य ढांक, मजीरा, डंका, कसेरू, तथा नगड़िया प्रयोग होते हैं।

बुन्देलखण्ड के अधिकान्श गाँव में कारसदेव के चबूतरे बने हुये हैं। कारसदेव पशुपालक अहीर जाति के एक वीर देवता हैं। इनको अहीर और गूजरों का देवता कह सकते हैं। ईंटों के त्रिकोण आकार के दो छोटे से घर बने होते है। इनमें एक तो कारसदेव और दूसरे उनके भाई सूरपाल हैं। वही सफेद कपड़े की झंडिया(ध्वजाएं) फहराती रहती है। प्रत्येक महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को अहीर गूजर रात्रि में इकट्ठे होते हैं और घुल्ला के सिर पर कारसदेव आते हैं। सवारी के आह्वान के लिए डमरू और घंधुरू लगी हुई ढोलक पर जो ढांक कहलाती है, वो पीतल या मिट्टी की बनी होती है और कुछ विशेष प्रकार के गीत गाये जाते हैं जो गोट कहलाते हैं।

इन गोंटों में कारसदेव के जन्म से लेकर मृत्यु तक की पूरी कथा कही गई है। गोट्या ढोलक को एक ओर लकड़ी और दूसरी ओर हाथ से बजाता ओर गोंटें गाता हैं। सवा सेर भोग– जिसमें आटा, दाल, घी, गुड़ आदि शामिल है। प्रत्येक भगत नारियल और बताशे चढ़ाता है।

फाग गायन

बुन्देलखण्ड में बसंत ऋतु में फड़ों पर फाग गायन की लोक परम्परा है। इसमें ईसुरी तथा अन्य कवियों की चौकड़िया या छंदयाऊ/सखियाऊ फागें गाई जाती हैं। इनके वर्ण्य विषय श्रृंगार भक्ति तथा नीति आदि होते हैं।

ख्याल लावनी(लावण्य)

बुन्देलखण्ड की फड़बाजी में ख्याल तथा लावनी विशेष लोक प्रिय हैं ख्याल का अर्थ है विचार–यह खेल के रूप में, गीत शैली में प्रतिस्पर्द्धात्मक होते हैं लावनी का अर्थ है–सलौनी यानी रूचिकर (मनोहर)। इस प्रकार ख्याल लावनी दो गुटों मे सरस का जबाबी गायन है। इसमें दो गायन संप्रदाय कलगी तथा 'हमस' होते है इन दोनों संप्रदायों के बीच जबाबी गायन–प्रतियोगिता होती है। प्रमुख वाद्य ढपली है।

कछयाऊ गारी

काछी जाति के पुरूषों तथा महिलाओं द्वारा विभिन्न अवसरों पर यह लोक गीत गाये जाते हैं। साथ में नृत्य भी होता है। वाद्यों में रमतूला, नगड़िया, ढोलक, खंजरी, झीका, मजीरा, कसेरू आदि प्रयुक्त होते हैं।

कहरी लोक गीत

यह लोक गीत वर्षा ऋतु में गाये जाते हैं तथा बुन्देली की उपबोली बनाफरी में प्रचुरता से मिलते हैं। इनमें श्रृंगार की प्रधानता और रसमयता हैं। यह गीत महिलाओं द्वारा हाथ चक्की पीसते समय अथवा खेतों में कृषि कार्य करते समय गाये जाते हैं। यह जतसार गीतों की कोटि में गिने जाते हैं। इनके साथ वाद्य प्रयुक्त नहीं होते हैं। चूड़ियों की खनखनाहट तथा हवा की सरसराहट इनके प्राकृतिक वाद्य हैं।

रामानन्दी संप्रदाय के भजन

इन के भजनों की व्यापक परम्परा इस क्षेत्र में विशेषकर चित्रकूट में पाई जाती है। आध्यात्मिकता का पुट लिये यह भजन तन्मयता और एकाग्रता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हँ। इनके साथ ढोलक, हरमोनियम, मंजीरा, खंजरी तथा झीका वाद्य प्रयुक्त होते हैं।

आल्हा गायन

जगनिक के लोक काव्य आल्ह खण्ड की लोकप्रियता सर्वविदित है। महोबा के आल्हा–ऊदल के चरित्र पर आधारित महोबा–शासक परमाल तथा पृथ्वीराज चौहान के बीच हुई 52 लड़ाइयों का वर्णन इस लोक कथा में है। मूलतः यह बुन्देली का गाथा काव्य है किन्तु इसकी देशव्यापी लोक प्रियता के कारण क्षेत्रीय बोलियों में इसकी अनेक गायन–शैलियां विकसित हुई है, इनमें कन्नौजी, बैसवाड़ी, ब्रज तथा बुन्देली शैलियां प्रमुख हैं। प्रमुख वाद्य ढोलक तथा मजीरा प्रयुक्त होते है।

हरबोल

यह महापुरुषों के चरित्र गेय–कथा (गाथा) के रुप में होते हैं। इनके पदान्त में प्रायः हरगंगे शब्द आने के कारण इन्हें हरबोल तथा गायक को हरबोला (बहुवचन– हरबोले) कहते हैं। इनका वाद्य ढपली, दो तीन व्यक्तियों के झुण्ड में हरबोले गांवों में द्वार–द्वार जाकर ढ़पली की थाप पर चरित्र सुनाते तथा बदले में पुरस्कार पाते है अब यह परम्परा विलुप्ति की ओर है।

ढोलामा

यह ढोला मारु नामक प्रेमी प्रेमिका की चर्चित जनगाथा का बुन्देली लोक भाषा में गेय संस्करण हैं। गायक ढ़पली की थाप, ढोलक तथा अन्य लोक वाद्यों के साथ यह कथानक गा–गा कर सुनाते हैं।

लोकगीतों का मानव जीवन के संस्कारों के साथ गहरा सम्बन्ध है। लोक–जीवन का सुन्दरतम प्रतिबिम्ब लोक–गीत संगीत में दिखाई पड़ता है। इन गीतों के स्वरों व शब्दों में लोक ने मानो अपनी सम्पूर्ण संवेदनाओं और अनुभूतियों को निष्कपट, सरल और स्वाभाविक ढंग से रख दिया है। वह सुख–दुःख के समय अपने अनुभवों को गीतों के माध्यम से प्रकट कर देता है इसके लिए वह शास्त्र का विचार नही करता। वह तो भावो को टेक के समय अपनी मस्ती में कुछ कह उठता है अथवा कुछ गा उठता है और वही वास्तविकता में लोकगीत होता था।

अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि लोकगीतों ने अभी तक लोक संस्कृति की बहुत बड़ी विरासत सम्हाल रखी है। बुन्देलखण्ड का लोक संगीत इतना अधिक समृद्ध है कि संगीत की तीनों विधाओं गायन, वादन एवम् नृत्य तीनों कलाओं में एक ही व्यक्ति कितना निपुण है, इसका साक्षात प्रमाण यहाँ के लोक नृत्यों में दिखाई देता है। काण्डरा व ढिमरियाई नृत्य में नर्तक हाथ में केंकडिया बजाता हुआ, साखी व गीत गाता हुआ पद–संचालन अर्थात नृत्य करता है। नृत्य में भिन्न–2 लयकारियों से चमत्कृत कर देता है, ऐसे उदाहरण अन्यत्र देखने को नही मिलते।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार
गांव की सम्माननीय स्त्रिया
इन्टरनेट से, समाचार पत्रों से
बुन्देली लोकगीत भाग–2 डा0 राम स्वरूप श्रीवास्तव क्रमाक–12, 41, 232,
प्रेमी अभिनन्दन ग्रथ पृष्ठ 607 614
मधुकर 1सितम्बर1942
बुन्देली लोकगीत भाग–2 डा0 रामस्वरुप श्रीवास्तव क्रमांक 232 पृ59
बुन्देली लोकगीत भाग–2 डॉ० राम स्वरूप श्रीवास्तव क्रमाक–41
कविता कोष से साभार
बुन्देलखण्ड विनीता`मम चंहम पेज देखे
बुन्देलखण्ड की लोक–चित्रकला डा0 श्रीमती मधु श्रीवास्तव 1–197 पेज देखे
हि0 सा० का0 वृ० इति० (षोडस भाग–1, पृ337)
2015ण्269415.चंहमे 33 जव 82 से मिलान करें लोक गीत

अकुत्रि
अकुत्रि

लोक गीत **Folk Song**